चन्दामामा
नवम्बर १९६३
60

नवम्बर १९६२

★

विषय - सूची

संपादकीय	१	गोरों का स्वर्ग	३३
भारत का इतिहास	२	तीन मूर्ख	३४
महाभारत	५	चन्दामामा का मन्दहास	३९
भयंकर घाटी (धारावाहिक)	९	किष्किन्धाकाण्ड (रामायण)	४९
अद्भुत कल्पना	१७	संसार के आश्चर्य	५७
पवित्र देवालय	२१	प्रश्नोत्तर	५८
दिव्यौषधि	२२	धूमकेतु	६२
तीन सूत्र	२६	फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता	६४
गधों का सौदा	२९		

★

एक प्रति ६० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ७-२०

केवल विक्स वेपोरब ही
सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े तीनों भागों पर तुरंत असर करता है...

सर्दी-ज़ुकाम को रातोंरात दूर करता है !
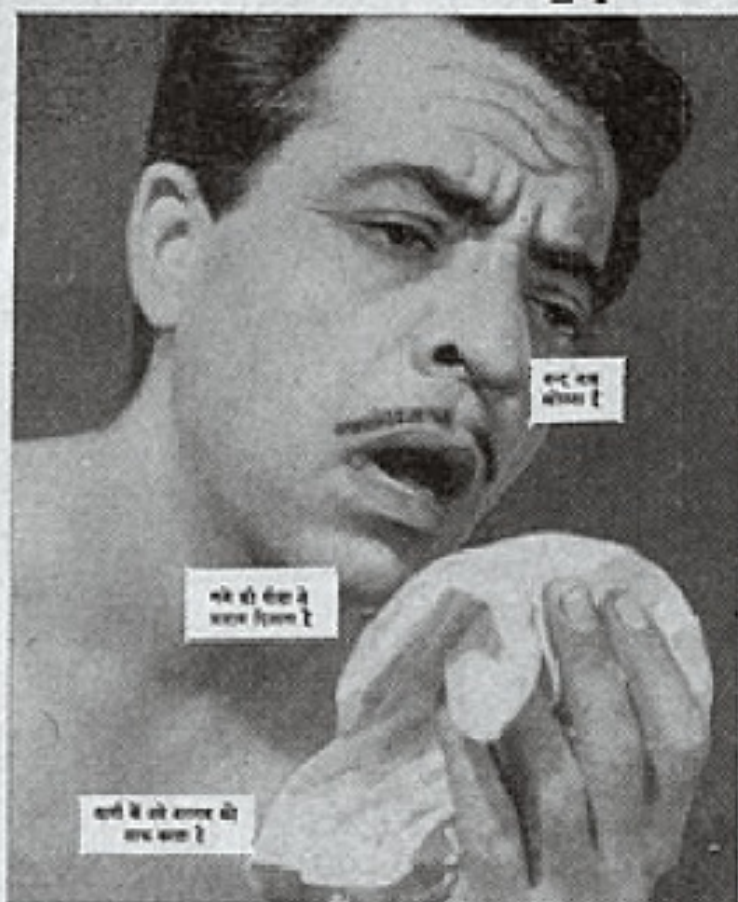
विक्स वेपोरब सारी रात दो तरीकों से आपकी नाक, गले तथा छाती में असर करता है—आपकी सर्दी से हुई परेशानियों को नष्ट करता है। आप आसानी से सांस लेने लगते हैं और चैन की नींद सोते हैं।

सर्दी के लक्षण (जैसे नाक का बहना, गले की खराश, खांसी, छाती में जकड़न) दिखायी पड़ते ही तुरंत विक्स वेपोरब इस्तेमाल कीजिये। केवल विक्स वेपोरब ही सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े सभी तीनों भागों — नाक, गले तथा छाती में तुरंत असर करता है और आपको सर्दी-ज़ुकाम के सभी कष्टों से रातोंरात आराम दिलाता है। सोते समय विक्स वेपोरब नाक, गले, छाती तथा पीठ पर मलिये। तुरंत ही आप विक्स वेपोरब की गरमाहट महसूस करने लगते हैं। साथ ही साथ आपके शरीर की सामान्य गरमी से वेपोरब शीघ्र ही औषधियुक्त भाप में बदल जाता है। यह भाप सारी रात आपके हर श्वास के साथ भीतर जाती रहती है। जबकि आप चैन की नींद सोते हैं यह आश्चर्यजनक द्विविधि क्रिया जहां सर्दी की तकलीफ़ सबसे ज़्यादा है वहां आपकी नाक, गले तथा छाती में गहराई तक होती रहती है। सुबह तक आपका सर्दी-ज़ुकाम जाता रहता है और आप फिर से खुश और स्वस्थ हो जाते हैं।

किफायती घरेलू शीशी

प्रचलित नीली शीशी

सुविधाजनक हरी डिब्बी

विक्स वेपोरब सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े इन तीनों भागों पर मलिये		
वेपोरब नाक के अन्दर व बाहर मलिये।	वेपोरब गले और छाती पर मलिये।	वेपोरब पूरी पीठ पर मलिये।

विक्स वेपोरब

परिवार के हर व्यक्ति के लिए —
सर्दी-ज़ुकाम को रातोंरात दूर करता है

LIFEBUOY
SOAP
लाइफ़बॉय
है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ !
लाइफ़बॉय साबुन मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है।
लाइफ़बॉय से आप का सारा परिवार तंदुरुस्त रहेगा !
L. 39-77 HI
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

ब्रिटेनिया
ग्लैक्सो

GLAXO
Britannia
ब्रिटेनिया
बिस्कुट
ISI

नवम्बर १९६३

'चन्दामामा' यह देशकी इस समय की दृष्टी से बहुत ही अच्छी मासिक पत्रिका है। इस में के रंग बिरंगे चित्र बहुत ही लुभावने लगते हैं। सितम्बर के अंक में 'चाणक्य की कथा' 'दुरसंगति' 'खलासी की गुफ़ा' 'किष्किन्धाकाण्ड' व 'भयंकर घाटी' अच्छे लगे। आप भविष्य में भी इस में ऐसी कथायें देंगे ऐसी आशा रखता हूँ। यह एक अपूर्व मासिक पत्रिका है। हमारे घर में सभी इसे बड़े चावसे पढ़ते हैं।

—चितरंजन वडवाईक, तुमसर

मैं "पाठकों के मत" स्तम्भ में अपना भी मत भेज रहा हूँ। उसको भी प्रकाशित करने का कष्ट करेंगे।

मेरे विचार से तो "चन्दामामा" में गेय-कथाओं का होना नितान्त जरूरी लगता है। उसके बिना पूरा अंक नीरस लगता है। जिस प्रकार हर अंक में धारावाहिक और बेताल कथाओं का विशेष स्थान रहता है उसी प्रकार गेयकथाएँ भी अवश्य होनी चाहिए। अतः गेयकथाओं का स्थान चन्दामामा से न हटाएँ। साथ ही पौराणिक कथाओं को भी सुविधानुसार प्रकाशित करते रहें। तभी यह पत्रिका सौन्दर्यपूर्ण होगी।

मैं इस पत्रिका के दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति की कामना करता हूँ। अधिक प्रशंसा करना थोड़ा ही है।

—दिनेशचंद्र, जगदीशपुर

"चन्दामामा" मैं ३ वर्ष से निरन्तर पढ़ रहा हूँ। यह बच्चों के लिए एक सुन्दर पत्रिका है। धारावाहिक कहानियाँ इस की विशेषता है। यदि इस पत्रिका में संक्षिप्त खेल समाचार भी बच्चों के ज्ञान के लिए दिये जाते तो अच्छा रहता। वर्तमान कथायें कहानी के रूप में ही उपयुक्त हैं।

—राजेन्द्र स्वरूप भटनागर, राजस्थान

"मैं चन्दामामा विगत दो वर्षों से हर माह की चन्दामामा अपने पासवाले "बुक स्टाल" से खरीदता हूँ तथा पढ़ता हूँ। इसकी धारावाहिक कहानियाँ बड़ी मनोरंजक होती है। अगस्त महिने की चन्दामामा में "परीक्षा फल" "कौन परोसे कौन खाये" तथा "उपदेश तथा उन के अर्थ" बहुत पसन्द आईं। मेरा अनुमान है, इस में बच्चों के तथा बड़ों के लिए पर्याप्त सामग्री है।

—सुरेशचन्द्र पमिपा, जहाजपुर

मैं पिछले कई वर्षों से आपके यहाँ से प्रकाशित होनेवाली लोकप्रिय मासिक पत्रिका "चन्दामामा" नियमित रूप से पढ़ता आ रहा हूँ। इसकी कहानियाँ इतनी रोचक और चित्र इतने मनोहर होते हैं कि इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। इसकी लोकप्रियता का यही तो रहस्य है। इस पत्रिका के लिए कुछ सुझाव दे रहा हूँ, यदि कार्यरूप दिया गया तो अत्यन्त आभारी हूँगा। मेरा पहला सुझाव है कि "भारत का इतिहास" और "संसार के आश्चर्य" जैसे नीरस स्तम्भ बन्द कर दिए जायें और इसके बदले कोई कहानी दी जाए। "फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता" के स्थान पर वर्ग पहेली प्रतियोगिता या कोई दूसरी प्रतियोगिता आरम्भ की जाए। कहानियाँ छोटे टाइप में छापी जाएँ ताकि थोड़े पृष्ठों में अधिक सामग्री दी जा सके।

—श्री दिलीप कुमार मालाकार,
इलाहाबाद

दूध के गुणों से भरपूर...
CPT-9 HIN
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
CADBURY'S MILK
कॅडबरिज़
मिल्क चॉकलेट
सिर्फ़ मिठाई ही नहीं... पौष्टिक खुराक भी है!

ग्राहकों को एक ज़रूरी सूचना!

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक

चन्दामामा प्रकाशन

वडपळणी :: मद्रास - २६
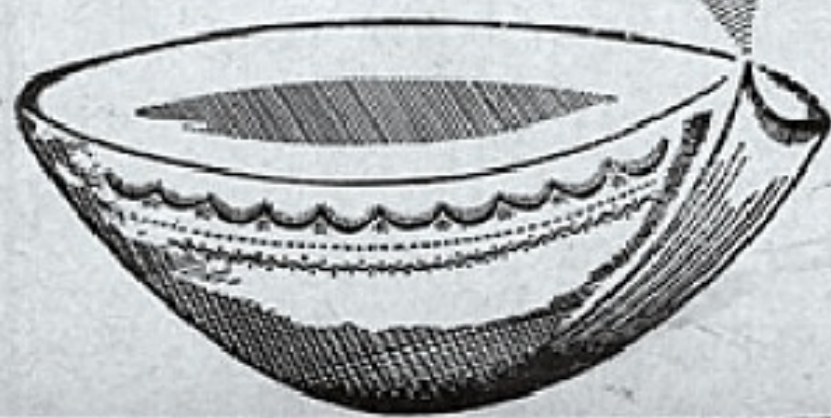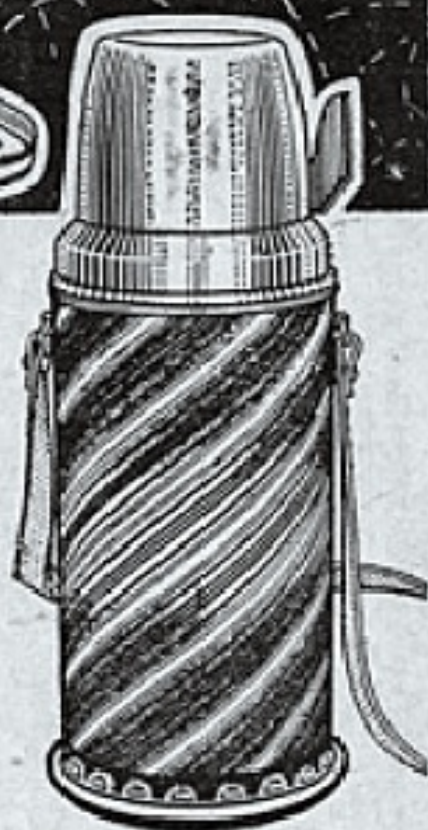
कर्तव्य-
पालन में
सब से आगे...
Satia
Royal Cream
जे.बी. मंघाराम एण्ड कं.
ग्वालियर और हैदराबाद

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हम 'चन्दामामा' में कई बार यात्रा वृत्तान्त दे चुके हैं, चूँकि हमारा विश्वास है कि इन वृत्तान्तों से ज्ञान वर्धन होता है।

हमारे पाठक प्रायः हमें लिखते हैं कि हम और अधिक यात्रा वृत्तान्त दें। काश, हम दे पाते।

पर, हमने हाल ही में एक यात्रा वृत्तान्त पुस्तकाकार में प्रकाशित किया है। इसका नाम है "मेरे देखे कुछ देशों की झलक" लेखक हैं, श्री सी. सुब्रह्मण्यम्। यह हमारे यहाँ से प्राप्य है।

हम इस प्रकार अपने पाठकों की मांग को कुछ अंशों तक पूरा कर पाये हैं।

वर्ष: १५ नवम्बर १९६२ अंक: २
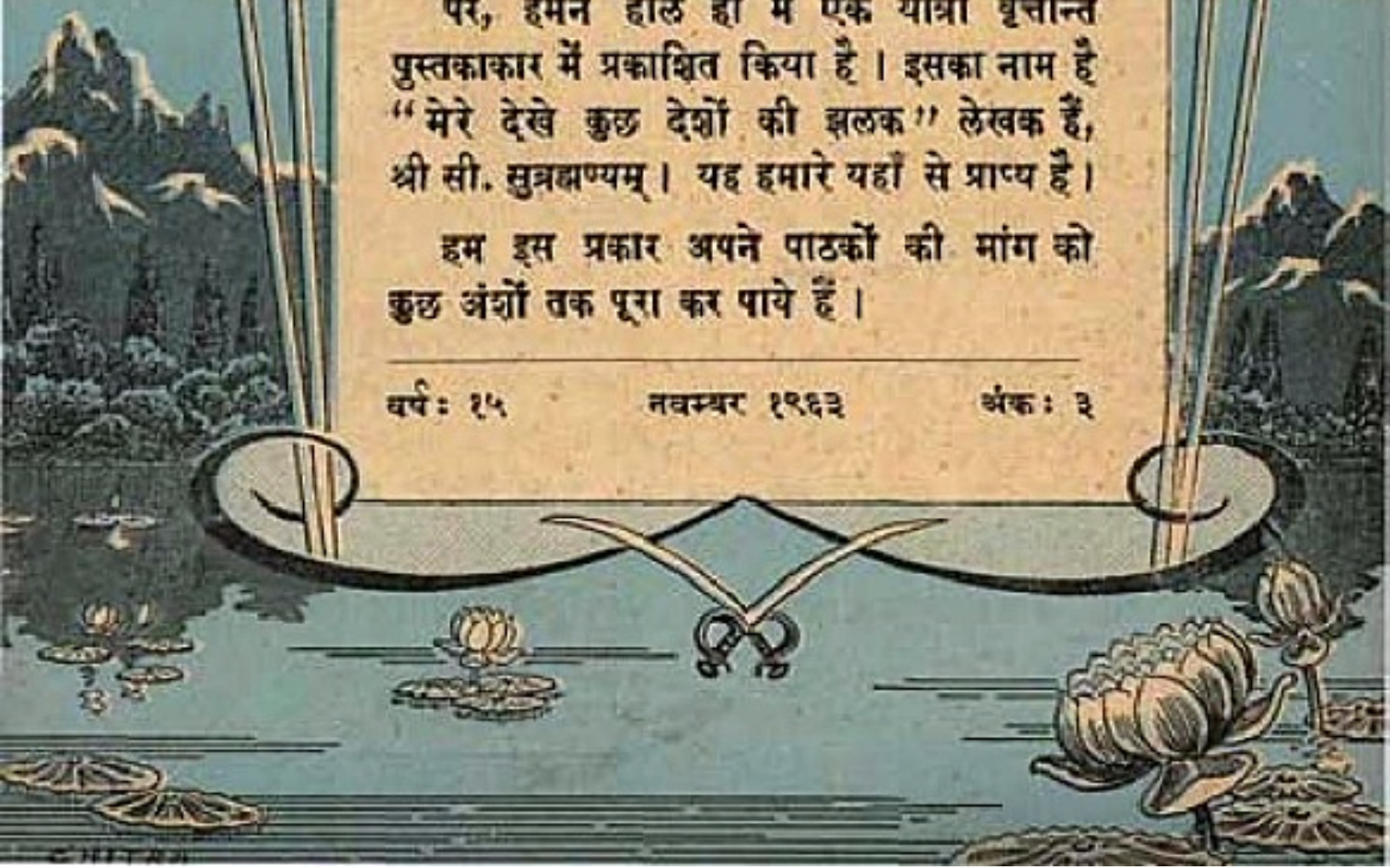
गाजी मलिक का वंश, घियासुद्दीन तुगलक के नाम से दिल्ली की गद्दी पर आया। उसका पिता बल्बन के समय में, भारत देश आया और उसने एक जाट कन्या से विवाह किया। जन्म से गाजी मलिक छोटी जात का था, वह अपनी शक्ति से साम्राज्य में अत्युन्नत स्थान पर आया।

हम पहिले ही जान चुके हैं कि उसने कितनी दक्षता से मंगोलों को पीछे हटा दिया था। वह बुढ़ापे में दिल्ली की गद्दी पर आया।

दिल्ली के बुज़ुर्गों ने उसे सुल्तान चुनने में, किसी प्रकार की कोई गल्ती न की। जब उसने बाँग डोर सम्भाली थी, तब परिस्थिति कोई अच्छी न थी। अल्लाउद्दीन के बाद, जो अराजकता फैली, उससे सारा शासन अस्त व्यस्त-सा हो गया था। दूर के राष्ट्रों को इस राज्य की कोई परवाह न थी। परन्तु उसने इन कठिन परिस्थितियों का, बुद्धिमत्ता से सामना किया। शासन हाथ में लेते ही उसने उसको सम्भाला, कुछ दुष्प्रथाओं को बन्द कर दिया। मुबारक और खुसरो ने खज़ाना खाली कर दिया था। इसलिए उसने पूछताछ करवा कर, उन जागीरों को रद्द करवा दी, जो अवैध तरीके से दी गई थीं। जनता के क्षेम के लिए भी उसने कई कदम उठाये। प्रान्तों में उसने ईमानदार लोगों को गवर्नर नियुक्त किया। खेती का दसवाँ हिस्सा उसने कर के रूप में निश्चित किया। उसने ऐसे भी नियम बनाये, ताकि कर्मचारी अपने अधिकारों का दुर्विनियोग न करें। उसने कर्षकों को प्रोत्साहित किया। उसने नहरें

खुदवायीं, बाग लगवाये। डाकू और डकैतों से बचाने के लिए, किले बनवाये।

सुल्तान ने कानून, रक्षण आदि सरकारी महकमों में भी काफ़ी सुधार किये। देश में शान्ति और सुरक्षा थी। गरीबों की मदद की। धार्मिक संस्थाओं और कवियों को पोषित किया। अमीर खुसरो, जो उसके दरबार में कवि था, वह महीने में हज़ार "तनका" दिया करता था।

साम्राज्य के संरक्षण, सैनिक बल से शासन चलाने में वह खिलजियों के मार्ग पर ही चला। अलाउद्दीन के बाद, वरंगल में काकतीय प्रतापरुद्र द्वितीय ने इतनी शक्ति बटोर ली कि उसने दिल्ली की सल्तनत को कर देने से इनकार कर दिया। इसलिए घियासुद्दीन तुगलक ने गद्दी पर आने के दो साल बाद, अपने लड़के फ़खुद्दीन मोहम्मद जूना खान के नीचे एक बड़ी सेना वारंगल भेजी। यह सेना शायद षड्यन्त्र के कारण, या छूत की बीमारी के कारण अपने कार्य में असफल रही। युवराज जूना दिल्ली वापिस चला आया।

फिर चार महीने बाद उसी के नेतृत्व में फिर वारंगल पर चढ़ाई की गई। इस

बार प्रतापरुद्र पराजित हुआ और सपरिवार शत्रु के हाथ आ गया। जूना ने प्रतापरुद्र को बन्दी बनाकर दिल्ली भेज दिया। काकतीय राज्य को वश में करके, उसने वारंगल को सुल्तानपुर नाम दिया। यद्यपि काकतीय साम्राज्य दिल्ली साम्राज्य में नहीं मिला दिया गया था, तो भी उसकी शक्ति क्षीण हो गई थी।

बेन्गाल का गवर्नर फिरोज शा १३१८ में मर गया। उसके बाद उसके पुत्रों में फूट हो गई। उनमें घियासुद्दीन बहादुर सोनार गाँव को राजधानी बनाकर पूर्वी बेन्गाल पर स्वतन्त्र रूप से शासन करता आया था। अपने पिता के स्थान पर, जो लाकौती को राजधानी बना। बेन्गाल में शासन कर रहा था, शिहाबुद्दीन बुघ्रा आ गया। इन दोनों की और नासिरुद्दीन नाम के तीसरे लड़के से बेन्गाल के राज्य के लिए होड़ हुई। १३१९ में घियासुद्दीन ने बुघ्रा को हराया और बेन्गाल के सिंहासन को हथिया लिया। नासिरुद्दीन ने दिल्ली के सुल्तान की मदद माँगी। १३२५ में सुल्तान लाकौती सेना के साथ गया। घियासुद्दीन बहादुर को पकड़कर बन्दी बनाया, नासिरुद्दीन को पश्चिम बेन्गाल का गवर्नर बनाया। दोनों बेन्गालों को दिल्ली का सामन्त राज्य बनाया।

उसके बाद घियासुद्दीन तुगलक अधिक दिन न जिया। जूना ने जो लकड़ी का भवन बनाया था, वह ढह गया। उसके ढह जाने से, १३२५ फरवरी में उसकी मौत हो गई। कई का विश्वास है कि जूना ने अपने पिता की मृत्यु स्वयं करवायी थी।

महाभारत

युधिष्ठिर ने जब कुन्ती को और स्त्रियों के साथ घर जाने के लिए कहा तो कुन्ती ने कहा कि वह भी गान्धारी और धृतराष्ट्र के साथ वनवास पर जाना चाहती थी।

उसने युधिष्ठिर को उसके भाई और द्रौपदी को सौंपते हुए कहा—"गान्धारी और धृतराष्ट्र मेरे लिए ससुर और सास की तरह हैं। मैं भी उनकी सेवा करती तपस्या करूँगी।"

यह सुन युधिष्ठिर चकित हो गया। "यह क्या बात है। मैं यह नहीं मानूँगा। हमें और इस राज्य को छोड़कर कैसे जाओगे! जंगल में कैसे रहोगी!"

भीम ने कहा—"माँ, यदि तुम यह ही करना चाहती थी, तो हमसे इतना बड़ा युद्ध क्यों करवाया और अब हम सब को छोड़कर क्यों जंगल में रहने जा रही हो!"

पाण्डव सब रोने लगे। किसी ने उसको न छोड़ा। द्रौपदी और सुभद्रा भी उसके पीछे चलने लगीं।

उन सबको देखकर कुन्ती ने कहा—"तुम सब जुये में हारकर सारे सुख खो बैठे थे इसलिए निराश होकर मैंने तुम सबको युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया था। इसलिए नहीं कि मेरा इसमें स्वार्थ था। मैं अपने पति के समय ही सब राज्य भोगों का पूरी तरह आनन्द ले चुकी हूँ। दान भी मैंने किये। अब वन में तपस्या करके पुण्य कमाऊँगी। अब और कोई इच्छा नहीं है।"

पाण्डव जब हस्तिनापुर पहुँचे, तो उस नगर की हालत उस तरह थी, जो उत्सव के बाद होती है।

धृतराष्ट्र अपने अनुचरों के साथ दिन भर चलकर, गंगा के किनारे एक जगह ठहरा। वहाँ ब्राह्मणों ने अग्नि प्रज्वलित की। धृतराष्ट्र ने अग्नि की उपासना की और अस्त होते सूर्य को अर्पित की।

विदुर और संजय ने उसके लिए दूब से शैय्या तैयार की। उसके पास ही गान्धारी और कुन्ती के लिए भी दूब की शैय्यायें बनायी गई।

रात भर आग जलती रही। ब्राह्मणों ने वेद पठन किया। रात सुख से कट गई।

अगले दिन नित्यकृत्य से निवृत्त होकर, उन सब ने निष्ठापूर्वक तपस्या प्रारम्भ कर दी। परन्तु वे उस दिन हस्तिनापुर के पौरों को और उनके दुख का ही स्मरण करते रहे।

विदुर की सलाह पर, धृतराष्ट्र ने गंगा के तट पर अपने निवास की व्यवस्था कर ली। वहाँ वनवास करनेवाले ब्राह्मण और लोग आये। धृतराष्ट्र ने

कुन्ती का निश्चय देखकर, पाण्डव जरा सहमे। तब धृतराष्ट्र ने गान्धारी से कहा—"कुन्ती को हस्तिनापुर जाने के लिए कहो। पुण्य ही कमाना है, तो राज्य में रहकर भी कमाया जा सकता है। दान व्रत आदि से पुण्य पाया जा सकता है।"

गान्धारी ने उससे कहकर देखा। परन्तु कुन्ती ने अपना निश्चय न बदला। इस बीच पाण्डव और अन्तःपुर की स्त्रियों को वाहनों की ओर जाता देख; धृतराष्ट्र ने अपनी यात्रा प्रारम्भ की।

उनको कहानियाँ वगैरह सुनाकर, उनकी उचित मर्यादा करके भेज दिया।

उस दिन शाम को गंगा में गान्धारी के साथ स्नान करके, कई विधियाँ पूरी करके धृतराष्ट्र ने अग्नि की आराधना की।

बाद में, धृतराष्ट्र को विदुर आदि कुरुक्षेत्र ले गये। वहाँ शतयूक नाम का राजर्षि रह रहा था। दोनों मिलकर व्यास के आश्रम में आये। वहाँ धृतराष्ट्र ने अरण्यव्रत के साथ तपस्या प्रारम्भ की। कुन्ती और गान्धारी ने भी व्रत आदि करने शुरू किये। धृतराष्ट्र ने इन्द्रिय और मनस का निग्रह करना शुरू किया।

तपस्या के कारण उसकी त्वचा हड्डियों से जा चिपकी। विदुर और संजय उसकी सेवा करते रहे।

एक दिन धृतराष्ट्र को देखने नारद, पर्वत, देवल शिष्यों के साथ व्यास और कुछ लोग आये। शतयूक भी उस समय वहाँ ही था।

अभ्यागतों का कुन्ती ने विधि पूर्वक आतिथ्य किया। गोष्ठी हुई। अनेक कथायें कही सुनी गईं। उस समय नारद

ने उन राजाओं की कहानी सुनाई जो तपस्या के कारण स्वर्ग गये थे। शतयूक का बाबा, सहस्रचित्य, भगदत्त का बाबा शैलालय, मान्धाता का लड़का पुरुकुत्स आदि कितने ही वनों में तपस्या करके स्वर्ग पहुँचे थे और वहाँ नारद ने बताया उनको उसने कई बार देखा था।

"तुम्हारा भाई पाण्डु स्वर्ग में मुझे इन्द्र के बगल में ही दिखाई देता है। वह हमेशा तुम्हारी ही बात सोचता रहता है। तुम और गान्धारी तप की महिमा से वहीं जाओगे। कुन्ती भी पति के पास पहुँचेगी। विदुर युधिष्ठिर में मिल जायेगा। संजय तुम्हारे साथ स्वर्ग जायेगा।" नारद ने बताया।

नारद की ये बातें सुनकर गान्धारी और धृतराष्ट्र बड़े सन्तुष्ट हुए। वहाँ उपस्थित लोगों ने भी नारद की प्रशंसा की। तब शतयूक ने नारद से कहा—"महर्षि, तुम्हारी बातें सुनकर धृतराष्ट्र को मुझे और यहाँ उपस्थित सभी लोगों की, तपस्या में आस्था अधिक हो गई है। धृतराष्ट्र किन किन उत्तम लोकों में जायेंगे, हमें उनका विवरण सुनने की इच्छा हो रही है।"

तब नारद ने कहा—"धृतराष्ट्र की बात जब इन्द्रलोक में उठी, तब इन्द्र के मुँह ही मैंने दो चार बातें सुनीं। धृतराष्ट्र की अभी तीन वर्ष आयु है। उसके बाद, वह गान्धारी के साथ कुबेर भवन चला जायेगा। कामगामन विमान पर सवार होकर, दिव्याभरण पहिनकर, सब देवलोकों में स्वच्छन्द आ जा सकेगा।"

यह सुन धृतराष्ट्र को बड़ा आनन्द हुआ। फिर अभ्यागत मुनि सब वापिस चले गये।

[२८]

[मकड़दण्डी मान्त्रिक जान गया कि केशव और उसके साथी गुफाओं में छुपे हुए थे। तुरत उसने स्थूलकाय को पहाड़ के पास भेजा। उससे इस तरह उसने कहने को कहा, जैसे उसने उन सबको गुलाम बना लिया हो। यह सुन केशव और उनके साथी गुफा से बाहर आकर, स्थूलकाय की ओर रेंगते-रेंगते आने लगे। बाद में—]

केशव चुपचाप रेंगता गया और स्थूलकाय जहाँ खड़ा था, वहाँ रुका। केशव ने उसके पैरों के पास तल्वार रखकर धीमे से कहा—"स्थूलकाय! जो मैं कहूँ, उसे ज़रा ध्यान से सुनो। यदि तुम इधर-उधर हिले और यदि तुमने ईशारा किया कि कोई तेरे पीछे खड़ा है, तो तुम्हारे दोनों पैर कट सकते हैं।"

स्थूलकाय एक क्षण स्तब्ध-सा खड़ा रहा। फिर सरकंडे की तरह काँप-सा उठा। प्राणों के भय से उसने एक बार चिल्लाना चाहा, परन्तु उस तल्वार ने, जिसे केशव ने उसके पैरों पर रख रखा था, उसे काबू में रखा।

"कौन हो भाई तुम? कहीं केशव तो नहीं हो?" स्थूलकाय ने इस तरह

डर से, जो कुछ वह कहेगा उसे करने के लिए मैं भाग गया हूँ। मुझे मत मारो, तुम्हारा भला होगा।" स्थूलकाय डर के कारण ज़ोर से चिल्लाया।

स्थूलकाय की मूर्ति की तरह खड़े रहना, ओंठ हिलाकर, फिर उसको कुछ ध्वनि

केशव ने पास खड़े जयमल की ओर सिर मोड़कर कहा—"यह अपने मित्रों से कुछ कहता-सा लगता है।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं है। पर मालूम है हम पर क्या आपत्ति आनेवाली है! वह ब्रह्मदण्डी और गरुड़ के मुँहवाला आदमी, अपने साथियों को लेकर हमें पकड़ने के लिए निकल पड़े होगें।" जयमल ने कहा।

केशव ने तलवार से स्थूलकाय के हाथ को छूकर कहा—"सच बताओ, नहीं तो पैरों के साथ तुम्हारे हाथ भी काट दिये जायेंगे। अब बताओ, ब्रह्मदण्डी और गरुड़ के मुँहवाला क्या कर रहे हैं!"

"वे दोनों आपस में कुछ सलाह करते से मालूम होते हैं। जितवर्मा और शक्तिवर्मा अपनी तलवारों को तेज़ कर रहे हैं। मुझे बस यही दिखाई देता है।" स्थूलकाय ने कहा।

स्थूलकाय की बात में कुछ भी असत्य न था। ब्रह्मदण्डी और गरुड़ के मुँहवाले मनुष्य ने तब तक कुछ पंखवाले मनुष्यों को यह जानने के लिए भेज दिया था कि शत्रुओं की संख्या और शक्ति क्या है। उनमें से कई ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर चढ़ गये और वहाँ से उन्होंने देखा कि स्थूलकाय के पत्थर के पीछे केशव, जयमल और जंगली गोमान्ना खड़े थे।

"शत्रु बस, तीन ही तीन हैं। उन तीनों को, बायें हाथ से घसीटा जा सकता है।" सोचते हुए पंखवाले मनुष्य ने अपने सरदार के पास आकर जो कुछ उन्होंने देखा था, कहा।

अनुचरों की सूचना पर गरुड़ के मुँहवाले ने भौंहों को सिकोड़ कर कहा—"इसमें कोई बड़ा धोखा है। ब्रह्मदण्डी,

केवल तीन ही तीन आदमी इतनी बहादुरी से हम लोगों में आ सकेंगे, यह मैं नहीं मानता। नहीं, जरूर कोई बात है।"

"यदि मैं उनके बारे में जानता होता, तो मैं भी न मानता।" कहते हुए त्रक्षदण्डी ज़ोर से हँसा।

"उनमें से एक केशव है और दूसरा मेरा पुराना शिष्य जयमल्ल है और तीसरा कोई जंगली होगा। वे तीनों महिषा नक्षत्र के अन्दर पैदा हुए हैं। उसमें पैदा होनेवाले न आगे देख पाते हैं, न पीछे ही। वे बस, अपनी ही राह पर निकल पड़ते हैं।" त्रक्षदण्डी ने हँसते हँसते कहा।

"तब हमें क्या करना होगा!" गरुड़ के मुँहवाले ने कहा।

"और करना ही क्या है, उन तीनों का पकड़ा जाये।" त्रक्षदण्डी ने झट सुझाव दिया।

"वे बाण, तलवार लेकर ही घूमते फिरते हैं। मैं नहीं सोचता कि वे इतनी आसानी से मिलेंगे। हम में से कई को मरना होगा। पहिले उस स्थूलकाय को वे खतम कर देंगे।" गरुड़ के मुँहवाले ने कहा।

"वह नरभक्षकों द्वारा कभी का मार दिया गया होता। मैं ही उसे प्राण देकर लाया हूँ। आज जान लो कि उसकी आयु समाप्त हो गयी है। खैर, हम को और तुम को भयंकर घाटी का धन और आधे राज्य का आनन्द लेने के लिए कई सालों जीते रहना है। इसलिए हमें उनके बाणों की पहुँच तक नहीं जाना चाहिए। हम अपने सेवकों को उन्हें पकड़ने के लिए भेजेंगे।" त्रक्षदण्डी मान्त्रिक ने धीमे धीमे सलाह देते हुए कहा।

बाण की ध्वनि सुनते ही ब्रह्मदण्डी उछला। "अरे, ये दुष्ट हम पर ही बाण मारते से लगते हैं। भागो। भागो।" चिल्लाते चिल्लाते पीछे के पेड़ों की ओर भागे।

गरुड़ के मुँहवाला सरदार जित और शक्ति भी उसके पीछे भागे।

गोमान्ना के साथ केशव और जयमल्ल भी खड़े हुए। उनको ब्रह्मदण्डी का भागना आदि दिखाई दिया। वे अभी सोच ही रहे थे कि उनका पीछा किया जाये या न किया जाये कि पेड़ों पर से पंखवाले मनुष्य, जो बाकी रह गये थे, वे भी ज़ोर से चिल्लाते उनके ऊपर उड़ने लगे।

केशव और उसके साथियों ने एक के बाद एक बाण, नीचे उछलनेवाले पंखोंवाले मनुष्यों पर छोड़े। उनमें से कुछ बाणों की चोट लगते ही चीखते चिल्लाते हवा में कलाबाजियाँ खाते, नीचे गिरे।

जयमल्ल और केशव अब गुफ़ा में जाने को सोच ही रहे थे कि उन्होंने पीछे मुड़कर जो देखा, तो पत्थरों के पीछे से एक और गुट चिल्लाता ऊपर उठा। उन सब के पास तेज़, लम्बे भाले थे।

"अब बाणों से काम न चलेगा। शत्रुओं ने हमारी गुफ़ा के द्वार को घेर लिया है। लड़ते-लड़ते हमें इनका मुकाबला करके बाहर निकलना होगा। बिना इनके हाथ लगे, चाहे हम कहीं भी भागें, कोई बात नहीं।" कहकर जयमल्ल तल्वार लेकर पंखवाले मनुष्यों का ज़ोर शोर से मुकाबला करने लगा।

केशव, गोमान्ना, जयमल्ल के तल्वार की चोट खाकर एक एक पंखवाला मनुष्य नीचे गिरने लगा। हाथों में, जो उन्होंने पंख बाँध रखे थे उनसे उनको इस द्वन्द्व युद्ध में बड़ी रुकावट हुई। जब उन्होंने भाला घुमाना चाहा, तो पंख एक दूसरे से टकराये और वे छापों की तरह नीचे गिर गये।

"हम जीत गये हैं, केशव। अब हम आराम से गुफ़ा में जा सकते है।" कहकर, उसने दो कदम आगे रखे, फिर वे यकायक सब के सब स्तब्ध-से खड़े हो गये।

उन्हे ऐसा लगा, जैसे आदमियों की दीवार सामने हो। अपने साथियों के साथ गरुड़ के मुँहवाला सरदार वहाँ था। जयमल्ल के साथ केशव और जंगली गोमान्ना ने भी चारों ओर देखा। उन्होंने देखा कि सैकड़ों पंखवाले मनुष्य उनको घेरे खड़े थे। ब्रह्मदण्डी कहाँ है! वे सोचने लगे। तुरत ब्रह्मदण्डी की घंटी की सी आवाज़ उनको सुनाई दी—"उसको जीवित पकड़ लो, बाकी दोनों की बोटी-बोटी काट दो।"

[अभी है]

अद्भुत कल्पना

एक गाँव में चार शेखीबाज लड़के थे।

एक दिन गाँव के सिरे की धर्मशाला में बाहर एक आदमी को आता देखा। उस आदमी ने अच्छे कपड़े पहिने हुए थे। चारों लड़कों को उसके कपड़े चुराने की सूझी, इसलिए वे धर्मशाला गये और उससे इधर उधर की बातें करने लगे।

उनमें से एक ने कहा—"एक छोटी-सी बाजी लगाये। हरेक अपने अपने एक अजीब अनुभव को सुनाये और अगर कोई सुननेवाला उस अनुभव पर विश्वास न करे, तो न विश्वास करनेवाला कहानी सुनानेवाले का दास हो जायेगा।"

इसके लिए बाहर का आदमी भी मान गया। शेखीबाज लड़के सन्तुष्ट हुए चूँकि वे ऐसी कहानियाँ सुनाते थे, जिन पर किसी को विश्वास नहीं हो सकता था। बाहरवाला आदमी जरूर उनके फन्दे में फँसेगा, शेखीबाज लड़कों का ख्याल था।

पहिले ने अपनी कथा यों कही—"जब मैं माँ के पेट में था, तो उसने मेरे पिता से कहा कि घर के सामने के जामुन के पेड़ के जामुन खाने की उसकी इच्छा थी। मेरे पिता ने कहा कि वह उतने बड़े पेड़ पर न चढ़ सकेगा। मेरे भाईयों से जब उसने पूछा तो उन्होंने भी यही कहा। मुझे तरस आ गया। मैं माँ के पेट में से निकला। जामुन के पेड़ पर चढ़ा। जामुन तोड़कर मैंने रसोई घर में छुपाकर रख दिये। फिर मैं माँ के पेट में इस तरह घुस गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। मेरी माँ ने जितने जामुन चाहे,

उतने खाये। कुछ गाँव में बाँटदिये। बाकी जो बचे उनको गली में डाल दिया, वे भी इतने थे कि एक टीला-सा बन गया।"

यह कहानी सुनाकर, शेखीबाज लड़के ने बाहर के आदमी की ओर देखा। बाहर के आदमी ने यूँ सिर हिलाया, जैसे उसको इस कहानी पर विश्वास हो गया हो। तीनों लड़कों ने भी सिर हिलाये।

तब दूसरे लड़के ने एक कहानी सुनाई—"जब मैं सप्ताह भर का लड़का था, तब मैं जंगल में टहलने गया। वहाँ मुझे एक इमली का पेड़ दिखाई दिया। उस पर पकी इमलियाँ थीं। चूँकि मैं भूखा था, इसलिए मैंने पेट भरकर इमली खायी। मस्ती-सी आ गई और उस मस्ती में मेरेलिए पेड़ से उतरना मुश्किल हो गया। इसलिए मैं गाँव गया। वहाँ से एक सीढ़ी लाया और सीढ़ी पर से नीचे उतर आया।"

बाहर के आदमी ने फिर इस तरह सिर हिलाया, जैसे उसे इस पर भी विश्वास हुआ हो। तीनों लड़कों ने भी सिर हिलाये।

तब तीसरे लड़के ने एक कहानी सुनाई—"जब मैं एक साल का था, तो मुझे खरगोश-सी कोई चीज़ दिखाई दी और मैं उसके पीछे भागने लगा। वह एक झाड़ी में छुप गया। जब मैंने भी उसके पीछे जाना चाहा, तो देखता क्या हूँ, कि वह एक शेर है। उसने मुझे निगलने के लिए मुँह खोला। मैंने कहा कि मुझे खाना ठीक न था। मैंने उसे खरगोश समझकर, उसे भगाया था। उसने मेरी बात न मानी और वह मुझ पर लपका मुझे भी गुस्सा आ गया। उसका ऊपरला चमड़ा पकड़कर मैंने उसे घूँसा मारा। उस चोट से शेर के दो टुकड़े हो गये और वह मर गया।"

बाहर के आदमी ने यह सुनकर भी यूँ सिर हिलाया जैसे उसे इस पर भी विश्वास हो। बाकी तीन ने भी सिर हिलाये।

तब चौथे लड़के ने यूँ एक कहानी सुनाई—"पिछले साल मैं मछली पकड़ने गया। एक भी मछली न मिली। जब और मछियारों से पूछा, तो उन्होंने भी बताया कि उनको भी कोई मछली नहीं मिली थी। यह सोच कि नदी की तह में कुछ हो रहा था, यह देखने के लिए मैं अपनी किश्ती से पानी में कूदा। नदी की तह में एक बड़ी मछली थी और वह सब मछलियों को खा रही थी। मैंने उस मछली को एक मुक्के से मार दिया। चूँकि मुझे भूख लग रही थी, इसलिए मैंने वहीं आग जलायी, उस मछली को भूना और उसे पूरा का पूरा खा गया। फिर मैं पानी के ऊपर आया और नाव में सवार होकर घर चला आया।"

यह कहानी सुनकर, बाहर के आदमी ने यूँ सिर हिलाया। जैसे उसे इस पर भी विश्वास हो।
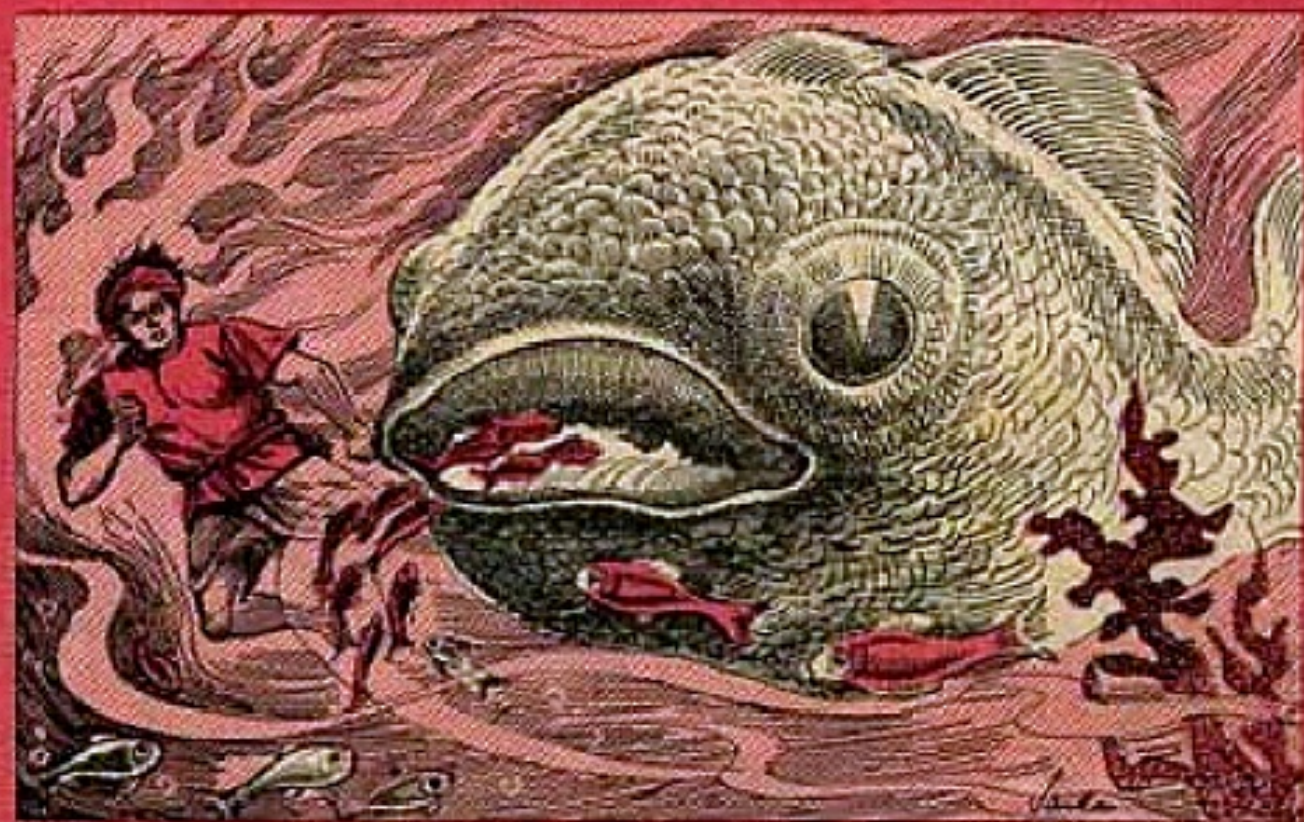
अब बाहर के आदमी के कहानी सुनाने की बारी थी। उसने यूँ कहानी सुनायी।

"कुछ दिन पहिले मेरे पास कपास का एक खेत था। उनमें एक कपास का पेड़ बहुत बड़ा था। लाल लाल था। पहिले तो उसके न पत्ते थे न कोई टहनी ही। फिर उसके चार टहनियाँ आयीं। एक एक टहनी पर एक एक फल आया। चार फल निकालकर जब खोले तो चार फलों में से चार युवक निकले। चूँकि, वे मेरे खेत में लगे चार फलों से निकले थे। इसलिए वे चारों मेरे गुलाम थे। उनसे खेत में काम करवाया। चूँकि वे निरे आलसी थे, इसलिए वे कुछ दिन काम करके, भाग गये। उन्हें खोजता मैं आया और आखिर मैं उनको यहाँ पा सका। तुम ही वे चारों हो, तुम मेरे साथ मेरे खेत चले आओ।"

यह कहानी सुनकर चारों लड़कों के चेहरे उतर गये। उनके सामने अच्छी समस्या थी। कहानी यदि वे सच बताते हैं तो यह मानना होगा कि वे उसके गुलाम थे। कहानी यदि झूट बताते हैं, तो शर्त के मुताबिक उनको उसका दास बनना ही होगा।

धर्मशाला के और लोगों ने पूछा—"क्यों नहीं बताते कि यह कथा सच है कि नहीं!" परन्तु उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

"खैर, जो तुम्हारे बदन पर कपड़े हैं, वे मुझे दे दो। मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।" बाहर के आदमी ने कहा। वह उनके कपड़े बटोरकर, गाँव छोड़कर चला गया।

पवित्र देवालय

एक ग्राम में एक देवालय का धर्मकर्ता था। वह गाँववालों को पुराण पढ़कर सुनाया करता। एक दिन पुराण पढ़ते हुए उसने कहा—"ज्ञानी की दृष्टि में सभी कुछ ईश्वर है। पामर ही मनुष्यों में ब्राह्मण है, या चन्डाल है, आदि भेदभाव देखते हैं। यह जो जानता है, वही ज्ञानी है।"

दूर खड़ा एक अछूत यह बात सुन रहा था। पुराण समाप्त होते ही। धर्मकर्ता से उसने पूछा—"तो स्वामी, मुझे देवालय में आने देने के लिए क्या आपत्ति है? आप ज्ञानी हैं। आप के लिए कोई भेदभाव नहीं है।" धर्मकर्ता ने हैरान होकर कहा—"माना, कि मैं ज्ञानी हूँ। आलय का भगवान तो अनुमति दे। भगवान क्या कहते हैं, पूछकर बताऊँगा। ज़रा ठहरो..."

अछूत ने कुछ दिनों बाद फिर धर्मकर्ता से पूछा—"क्या अभी तक भगवान ने कुछ नहीं कहा है?"

जब फिर दोनों कुछ दिनों बाद मिले तो उसने कहा—"तेरे बारे में भगवान से बहुत बार कहा पर भगवान कुछ नहीं कह रहा है।"

"वह भगवान ने मुझे स्वयं बता दिया है।" अछूत ने कहा।

धर्मकर्ता ने पूछा—"क्या कहा है?"

"अरे, उस देवालय में मे ने मुझे ही नहीं आने देते, तुझे क्यों आने देंगे! भगवान ने मुझ से यह कहा था।" अछूत ने कहा।

दिव्यौषधि

एक देश में एक राजा और रानी थे। वे दोनों मूढ़ थे। रानी पहिली बार गर्भवती हुई और उसने एक लड़की को जन्म दिया। वह छोटी तो थी ही। उसके सिर पर न बाल थे, न मुख में दान्त ही।

"छी....छी....यह भी क्या लड़की है!" रानी ने नाक भौं चढ़ाते हुए कहा।

"हमारे ऐसी लड़की पैदा हुई है, यदि लोगों को यह बात मालूम हो गई, तो कितना अपमान होगा।" राजा ने कहा। मन्त्रियों ने, राजा और रानी से कहा कि जब बच्चे पैदा होते हैं, तो सब इसी तरह होते हैं।

"हमें आश्वासित करने के लिए इधर उधर की बातें न करो। देश में जितने वैद्य हैं, उनको बुलवाओ।" राजा ने कहा।

वैद्य सब आये।

"यह सच है कि हमारे लड़की हुई है। परन्तु वह बहुत छोटी है। उसके सिर पर बाल नहीं हैं। न मुख में दान्त हैं। आप सब इसके लिए आवश्यक चिकित्सा कीजिए। औषधी देकर उसको जल्दी बड़ा करो। उसके सिर पर बाल लाओ। मुख में दान्त लाओ।" राजा ने उनसे कहा।

"महाराज! यह सम्भव नहीं है।"

"मैं सम्राट हूँ और यह मेरी आज्ञा है। फिर सम्भव न होने की क्या बात है। यदि यह न हुआ, तो तुम सब की पीठ की चमड़ी बेंतों से उखड़वा दूँगा।

नागेन्द्र

पाँच मिनिट की अवधि देता हूँ। इस बीच कोई औषधी सोच लो।" यह कहकर राजा चला गया।

वह पाँच मिनट बाद वापिस आया। उन वैद्यों से, जिन्होंने दीनतापूर्वक सिर झुका रखे थे, उसने कहा—"क्या सोचा है? मेरी लड़की की चिकित्सा करोगे? या दण्ड भुगतोगे?"

वैद्यों ने कुछ न कहा।

राजा ने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा—"बेंतों से इन सबको मारो।" तब एक वृद्ध वैद्य ने कहा—"महाराज! हम आपकी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार हैं। इसके लिए एक दिव्यौषधी है। यदि वह दी गई तो राजकुमारी बड़ी हो सकती है। उनके सिर पर बाल और मुख में दान्त आ जायेंगे।"

"अच्छा, तो वह दिव्यौषधी कहाँ है?" राजा ने पूछा।

"वह तैयार नहीं है। उसे तैयार करना होगा। तैयार करने के लिए कुछ समय लगेगा।" वृद्ध वैद्य ने कहा।

"कुछ देर क्यों लगेगी? मैं राजा हूँ। राजाधिराज हूँ। महासम्राट हूँ। अभी ही

मुझे दिव्यौषधी चाहिए। वह जल्दी तैयार क्यों न की जा सकेगी?" राजा ने कहा।

"आप जो कह रहे हैं, वह ठीक है। उस दिव्यौषधी को बनाने के लिए चार सौ पैंसठ चीज़ें चाहिए। तीन सौ बारह धातुओं की ज़रूरत है।" वैद्यने कहा।

राजा ने सगर्व कहा—"तो सब चीज़ें मँगवाकर दिव्यौषधी तुरत बनवाइये।"

"महाराज, यह उतनी जल्दी होनेवाला काम नहीं है। कई ऐसी चीज़ें हैं, जो दो साल में एकबार खिलती हैं। जब वह चौथी बार खिल रही हो, तभी उसे लाना

होगा। यही नहीं। एक ऐसी धातु है, जो, बर्फीले पहाड़ों पर ही मिल सकती है। बर्फ छः साल में एकबार पिघलने पर ही उसको लाना है।" वैद्य ने कहा।

"खैर, खैर, क्या वह दिव्यौषधी एक सप्ताह में बन सकेगी?" राजा ने पूछा।

"और कुछ समय लगेगा। महाराज। आप क्यों नहीं एक काम करते? आप अपनी लड़की को बारह वर्ष तक हमारे पास क्यों नहीं रखते? जो कुछ चिकित्सा हमें करनी है, हम कर देंगे।" वृद्ध वैद्य ने कहा।

राजा ने रानी की ओर मुड़कर कहा—"क्या कहती हो? क्या अपनी लड़की को इन्हें देकर बारह वर्ष तक चिकित्सा करवायें? या इन सबको बेतों से मरवा मरवा का ठण्डा करवायें।"

रानी ने थोड़ी देर सोचकर कहा—"इनको बारह वर्ष की अवधि देकर देखा जाये। यदि तब तक लड़की की चिकित्सा न की गई तब इनके सिर कटवाये जा सकते हैं।"

राजा इसके लिए मान गया। वैद्य राजकुमारी को अपने साथ ले गये। उन्होंने केवल उसे अच्छी तरह पाला पोसा ही नहीं, उसे पढ़ाया लिखाया भी, लोक ज्ञान भी दिया। वह उनके पास बारह वर्ष पली। फिर अपने घर चली गई। राजा और रानी सिर पर काले काले बाल और मुख में सफ़ेद सफ़ेद दान्त देख बड़े खुश हुए। उन्होंने वैद्यों को ईनाम भी दिया। उनके बाद, राजकुमारी गद्दी पर आयी और उसने बुद्धिमत्ता के साथ शासन किया।

D.G. REDDY
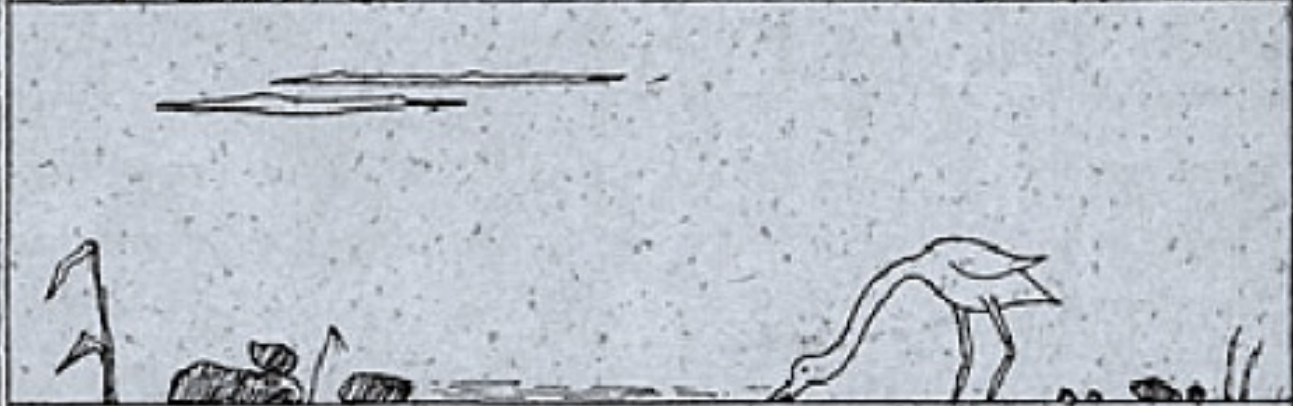
तीन सूत्र

एक गुरुकुल में एक गरीब विद्यार्थी रहा करता था। गुरु ने और विद्यार्थियों के साथ उसको भी शिक्षा दी। परन्तु दुर्भाग्यवश गरीब विद्यार्थी के पल्ले कुछ भी विद्या न पड़ी। जब सब शिष्य शिक्षा पूर्ति करके जा रहे थे, तब गुरु ने गरीब विद्यार्थी से कहा—"जो तुम्हारे साथ पढ़े थे, वे सब के सब पंडित हो गये हैं। तुम्हारा दुर्भाग्य या मेरा दुर्भाग्य कि तुम्हें कुछ भी विद्या न मिली। तुम्हें तीन सूत्र बताता हूँ। उन्हें याद रखो। यदि तुम भाग्यशाली रहे, तो तुम्हारी हालत भी सुधर सकती है।" उसने तीन सूत्र बताये।

चलते चलते वह आ जायेगा।

पूछते पूछते वह पता चल जायेगा।

यदि होशियार रहे, तो मृत्यु का भय न होगा।

गुरु के बताये इन तीन सूत्रों को याद करके गरीब विद्यार्थी घर के लिए निकला। रास्ते में उसने वेदवती नगर देखना चाहा। इसलिए उसने घर का रास्ता छोड़ दिया और वह वेदवती नगर की ओर चल पड़ा। उसे यह न मालूम था कि वह नगर कितनी दूर था। वह बहुत दूर था। गाड़ी में जाने के लिए उसके पास पैसा न था। इसलिए वह पैदल ही चलता रहा। कुछ महीनों बाद गरीब विद्यार्थी वेदवती नगर पहुँचा। गुरु का पहिला सूत्र....चलते चलते वह आ जायेगा। यूँ ठीक निकला।

वेदवती नगर बहुत बड़ा था। गरीब विद्यार्थी ने सोचा, कि जब नगर में आ ही गया हूँ, तो वहीं रहकर कोई काम

धन्धा कर लेना अच्छा था। उसने दौड़ धूप करके एक छोटी मोटी नौकरी भी पा ली और जब कभी काम न होता, तो वह नगर के बारे में प्रश्न किया करता।

"पूछते-पूछते वहीं पता लग जायेगा।" यह सूत्र भी ठीक निकला। कई से बात करने पर उस शिष्य को, उस नगर के बारे में अति मुख्य बात मालूम हुई। वह बात यह थी :—

इस नगर का राजा न था, रानी थी। यद्यपि उसके पाँच छः विवाह हो चुके थे, पर अब भी वह कन्या थी। हुआ यह था कि जिस किसी का उसके साथ विवाह हुआ, वह विवाह के दिन मर गया। जब इस तरह पाँच छः मर गये, तो किसी ने उसके साथ विवाह करने का साहस न किया।

यह देख मन्त्री ऊब गये, उन्होंने घोषणा की कि जो कोई रानी से विवाह करेगा, उसका राज्याभिषेक भी किया जायेगा। तब कोई विवाह करने न आया।

गरीब शिष्य को यह सुनकर, गुरु का तीसरा सूत्र झट याद हो आया। होशियार रहे, तो मृत्यु का भय नहीं रहेगा। चूँकि

उसे गुरु की बात में विश्वास था, गरीब शिष्य ने रानी से विवाह करने की ठानी। उसने राजमहल में जाकर मन्त्रियों से कहा कि वह रानी से विवाह करना चाहता था। वे बड़े खुश हुए, उन्होंने विवाह के लिए मुहूर्त निश्चित किया।

विवाह के दिन, राजोचित वस्त्र पहिनाकर गरीब शिष्य का विवाह किया गया। उस दिन रात शयनकक्ष में जाते ही, उसने अपने कपड़े उतारकर एक तरफ़ रख दिये, तलवार भी एक तरफ़ रख दी, कमरे से बाहर जो केले का पेड़, अलंकारार्थ रखा था, उसको काटकर ले आया। उसको उसने पलंग पर रखा और उस पर उसने चादर रख दी। फिर वह तलवार लेकर एक स्तम्भ के पीछे छुपकर खड़ा हो गया। क्योंकि मृत्यु के भय से बचने के लिए होशियारी जरूरी थी, इसलिए उसने न सोने की ठानी।

कुछ समय हुआ। छत पर से एक साँप, दुल्हे के पलंग के पास के स्तम्भ से नीचे उतरा और पलंग पर रखे, केले के तने को उसने काटा। उसी समय शिष्य तलवार लेकर आगे बढ़ा और उसने उसको मार दिया। फिर उसने मरे साँप और केले के तने को हटा दिया और आराम से सो गया।

अगले दिन जब दुल्हे को मन्त्रियों ने जीवित देखा, तो उनको बड़ी खुशी हुई। उसी दिन उन्होंने उसका राज्याभिषेक किया। विद्या तो न मिली, पर चूँकि उसे गुरु की बात पर विश्वास था, गरीब विद्यार्थी वेदवती नगर का राजा बना। उसने बहुत दिनों तक राज्य किया।

आदमियों का व्यापार

चीन में एक व्यापारी रहा करता था। उसका नाम चावो था। वह हमेशा घूमता रहता था। कहाँ-कहाँ खाने की जगहें थीं, वह खूब जानता था। परन्तु एक बार जब वह पूर्वी राजधानी की ओर जा रहा था, तो उसको एक ऐसे प्रान्त में से जाना पड़ा, जिससे वह परिचित न था। जब अन्धेरा होने लगा, तो खेत में काम करनेवालों से उसने पूछा—"यहाँ कहीं, ऐसी जगह है, जहाँ खाना मिल सके?"

"यदि वह टीला पार कर लिया, तो उसके पास एक जगह है, जहाँ गधे भी बेचे जाते हैं।" किसानों ने कहा।

चावो टीले पार करके पड़ाव पर पहुँचा। वह मकान बड़ा सुन्दर और आकर्षक था। चावो, घर के बाहर ही गदहे पर से उतरकर, अन्दर गया। घर की मालकिन पाँच-छः लोगों को शराब दे रही थी उसकी उम्र तीस वर्ष से अधिक न थी। विधवा थी। उसने चावो को देखकर कहा—"आप, अपने सवारी के गदहे और बोझवाले गदहे को घर के पीछे बाँध दीजिये। मेरे पास कोई नौकर-चाकर नहीं है।"

चावो अपने गदहों को घर के पीछे बाँध आया और अन्दर आकर, बाकी लोगों के साथ बेन्च पर बैठ गया। ठीक उसी समय भोजन परोसा जाने लगा था। भोजन बड़ा अच्छा था। भोजन के बाद अतिथि शराब पीते गप्प मारते वहीं बैठे रहे। चूँकि चावो शराब नहीं पीता था, इसलिए वह मिठाई खाता औरों के साथ गप्पें मारता रहा।

जल्दी ही सोने का समय हो गया। रोशनी के बुझ जाने के बाद, नशे में चूर अतिथि ज्योंही अपने बिस्तरे पर लेटे, त्योंही खुर्राटे मारकर सोने लगे। चावो का बिस्तर एक चटाई से सटा था। चटाई के उस तरफ़ घर की मालकिन सोती थी।

चावो बहुत देर तक सो न सका। जब थोड़ी बहुत नीन्द आने लगी, तो ज़ोर से आवाज़ हुई और वह उठ खड़ा हुआ ऐसी आवाज़ जैसे किसी भारी चीज़ को खींचा जा रहा हो, मकान मालिक की तरफ़ से आयी। चावो को डर लगा कि कोई चोर शायद उसको मार रहे थे। वह चुपचाप उठा, बैठकर चटाई में से जो देखा, तो उसमें एक छिद्र दिखाई दिया। उस छिद्र में से उसने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा। वह अकेली थी और उस पर कोई आपत्ति न आयी थी। एक भारी सन्दूक को कमरे के बीच में घसीटा गया था। उसने उस सन्दूक को खोला। उसके सामने घुटने टेके। उसमें से हाथ-भर लम्बे मनुष्य का गुड्डा बाहर निकला। उसे ज़मीन पर रखा। फिर उसने सन्दूक में से एक लकड़ी का बैल और लकड़ी का हल निकला।

विधवा ने बैल के पीछे हल जोता, उसके पीछे मनुष्य का खिलौना रखा। जब उसने उस पर पानी छिड़का, तो वे सब हिलने लगे, यह देख चावो चकित रह गया। उसके देखते देखते उन्होंने सारे कमरे में हल चला दिया। विधवा ने छोटे-से टोकरे में दाने देकर, मनुष्य के हाथ में रखा। उसने दाने, जहाँ जहाँ हल किया था, वहाँ वहाँ बिखेर दिये। दानें गिरते ही पौधे हो गये, उनमें कलियाँ भी आ गईं। विधवा ने उनको तोड़ लिया। उनको सुखा

मुखकर पीस-पासकर उसने आटा भी बनवा लिया। उस आटे से उसने रोटियाँ बनायीं। काम खतम होते ही वह सो गई, चावो भी सो गया।

अगले दिन सवेरे अतिथि उठे। स्नान करके, भोजन के लिए बैठे। उस स्त्री ने आकर उसको रोटियाँ परोसीं। चावो ने उन रोटियों को न खाना चाहा। कुड़ता हाथ में लेकर बाहर चला गया। जब वह अपने गदहों के साथ यात्रा पर निकलने ही वाला था, तो उसने खिड़की में से अन्दर देखा। उसके देखते-देखते अतिथि बेन्चों पर से नीचे लुढ़क पड़े और गदहे हो गये और सब एक साथ यों रेंगने लगे कि सारा मकान गूँजने लगा। इतने में विधवा एक लकड़ी लायी और उन सबको घर के पीछे हाँक कर ले गई। वहाँ उसने उनको बाँध दिया। चावो अपने गदहों को हाँकता, जल्दी ही दूर चला गया।

चावो पूर्वी राजधानी पहुँचा। जो आश्चर्य उसने देखा था, उसके बारे में उसने किसी से न कहा। वह अपना काम करके, वापसी यात्रा की तैयारी करने लगा। इस बार उसने कई रोटियाँ, जो विधवा की
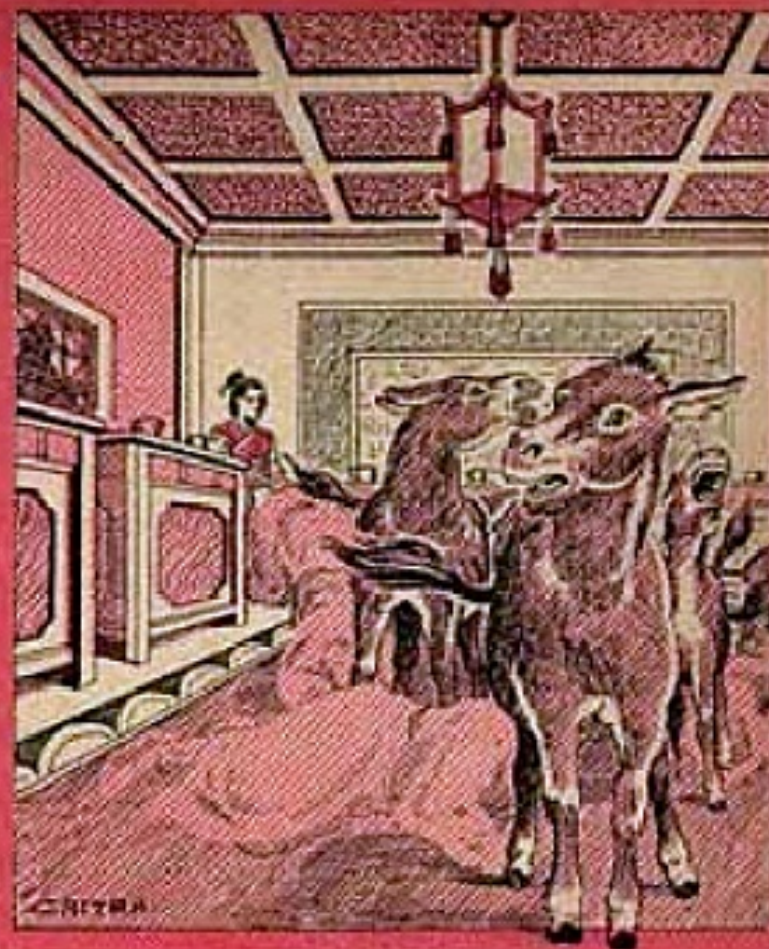
रोटियों की तरह थीं, खरीदीं और उनमें उसने वह रोटी भी रख दी, जो उसने न खायी थी।

वापिस आते समय भी, वह पड़ाव पर रुका। इस बार सिवाय उसके और कोई अतिथि न था। विधवा ने पहिले की तरह उसका खूब आदर-सत्कार किया। अच्छा भोजन दिया। भोजन के बाद दोनों अपने कमरे में चले गये।

जैसा कि चावो ने सोचा था, वैसे ही विधवा के सन्दूक खींचने की आहट हुई। चावो हँसकर सो गया। अगले दिन सवेरे

वह उसके लिए चाय के साथ रोटी भी लायी। परन्तु उससे पहिले ही चावो ने अपनी लायी हुई रोटियाँ मेज़ पर रख दी थीं। उसने उससे कहा—"मैंने रोटियाँ पूर्वी राजधानी में खरीदी हैं। बड़ी अच्छी हैं। ज़रा स्वाद के लिए एक खाकर तो देखो।" उसने उसको, उसीकी एक रोटी दे दी। उसे सन्देह न हुआ। वह यह भी न जान सकी कि उसने ही वह रोटी तैयार की थी। वह खाने लगी, अभी उसने दो तीन कौर ही निगले थे कि बेन्च पर से वह लुढ़क पड़ी और गदही बन गई।

उसकी चाल चल गई थी इसलिए चावो बड़ा खुश था। उसने गदही को मारकर उठाया। वह ताकतवर थी। फिर उसने विधवा के सन्दूक में से उन खिलौनों को निकालकर ज़मीन पर रखा। पर वे हिले भी न। यह सोच कि उनका यों रहने दिया जाना अच्छा न था उसने उनको जला दिया और नये गदहे पर सवार होकर चला गया।

उस गदहे ने उसको चार वर्ष ढोया। जब चावो उस पर सवार हो, चंगन नगर की गली में से जा रहा था कि एक वृद्ध सामने आया और उसने गधी को गौर से देखकर कहा—"ओहो.........तो तुम ढाबेवाली हो। कितनी बदल गयी हो।"

फिर उसने चावो से कहा—"तुमने इसको अच्छा सबक सिखाया। चार साल इसने सज़ा भुगतली अब इसे छोड़ दो।" उसकी बात सुनकर चावो गदही पर से उतरा। तुरत वह कहीं भाग गई। फिर उसका क्या हुआ, चावो न जान सका।

गोरों का स्वर्ग

यह उन दिनों की बात है, जब अमेरिका में दास प्रथा थी। जिमटर्नर के पास एक गुलाम था, जिसका नाम आईक था। जिम अपने सपनों के बारे में और अपने गुलाम को आये सपनों के बारे में कहने सुनने का बहुत शौकीन था।

एक दिन जब आईक अपने मालिक का कमरा साफ़ करने गया, तो जिम तभी सोकर उठा था। उसने कहा—"आईक मुझे बड़ा अजीब सपना आया है।" "क्या सपना आया है मालिक।"- आईक ने पूछा।

"सपने में निग्रो का स्वर्ग मुझे दिखाई दिया। जहाँ देखो कूड़ा कर्कट, गिरे टूटे घर, ढही मेंढ़ें, गढ़ों से भरी सड़कें, चीथड़े पहिने नीग्रो बच्चे आदि।" जिम ने कहा।

"आपको भी क्या तभी सपना आया था, जब कि मुझे आया था। मैं सपने में गोरों का स्वर्ग गया। वहाँ गलियों में सोना और चान्दी पड़ी थी। जहाँ देखो, वहीं दूध और शहद था। बहुत सुन्दर था, पर मैंने बहुत खोजा, मगर कहीं कोई कीड़ा तक भी मुझे न दिखाई दिया।" आईक ने कहा।

तीन मूर्ख

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हें देखकर दया आ रही है। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

महेन्द्रारण्य में कई जंगलियों के गाँव थे। एक गाँव में कल्पट नाम का युवक रहा करता था। उसके न माँ-बाप जीवित थे, न कोई भाई बहन वगैरह ही थे। उसकी सारी सम्पत्ति सौ गौवें थीं। वह उन गौवों का दूध बेचकर आराम से रहा करता।

बेताल कथाएँ

कल्पट सयाना हुआ। उसने विवाह करने का भी निश्चय किया। पता लगा कि पाँच-छः कोस दूर किसी गाँव में, एक सयानी लड़की थी। उस लड़की के पिता के पास छः हज़ार गौवें थीं। उसके एक ही लड़की थी। कल्पट का आदमी उससे शादी की बातचीत करने गया। "कम से कम सौ गौवें न दी गयीं, तो मैं लड़की न दूँगा।" लड़की के पिता ने कहा।

कल्पट ने पत्नी के लिए सौ गौवों को देना स्वीकार कर लिया।

पत्नी के आने के साथ कल्पट के घर दारिद्य भी आया। उसने पत्नी से कहा—"जो गौवें मेरे पास थीं, वे सब मैंने तुम्हारे लिए दे दी हैं। मैं अब बिल्कुल दरिद्र हूँ। हम गाँववालों की गौवें दुहकर जीवन निर्वाह करेंगे।"

"अच्छा, तो ऐसे ही सही।" पत्नी ने कहा।

कल्पट गाँववालों की गौवें चराता, कमाता, अपना और अपनी पत्नी का पेट भरता। एक दिन कल्पट की पत्नी घर के सामने खड़ी थी कि पर्णक नाम का एक युवक उसे देख, उस पर मुग्ध हो गया। उसने जैसे भी हो, उससे कल्पट को तलाक दिलाकर, उससे विवाह करने की ठानी। उसने एक बुढ़िया को यह काम पटाने के लिए भेजा। उस बुढ़िया ने कल्पट को घर में न देखकर, उसकी पत्नी को पर्णक की सलाह पहुँचायी। कल्पट की पत्नी ने उस बुढ़िया से कहा—"मैंने सब सुन लिया है। परन्तु किसी भी निश्चय पर आने के लिए समय की ज़रूरत है। सोचकर बताऊँगी।"
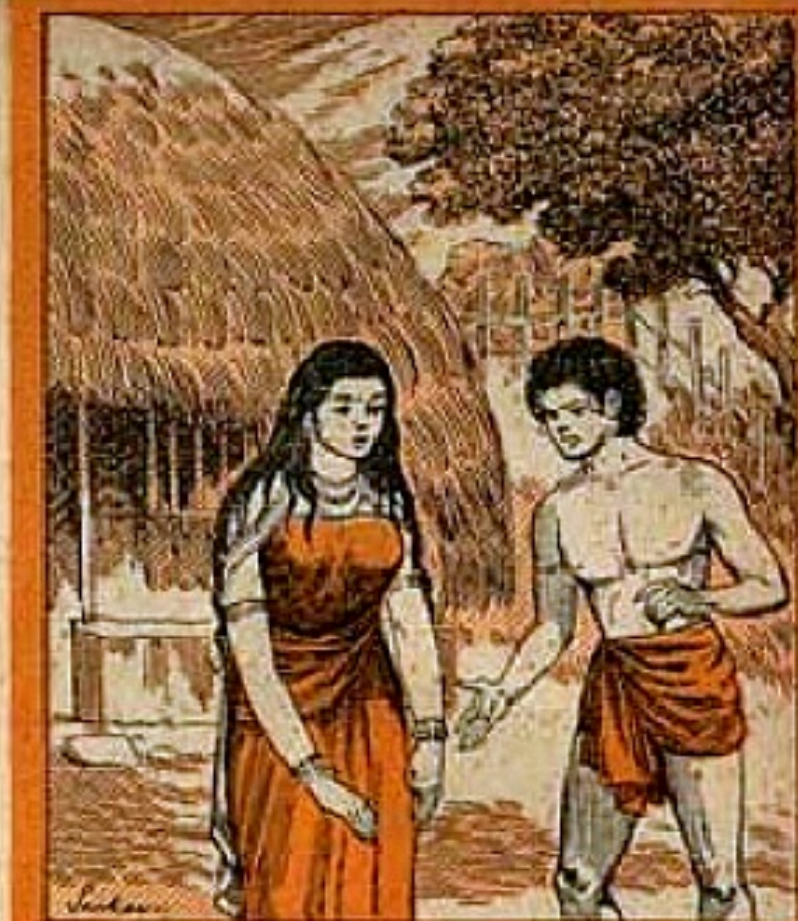
तीन महीने बीत गये। कल्पट के ससुर को अपनी लड़की को देखने की सूझी। वह दामाद के गाँव आया।

कल्पट की पत्नी ने अपने पिता को पानी देकर, चौपाल में बिठाया। जब पिता ने पूछा कि क्या हाल था, अच्छा हाल है, कहकर वह रसोई घर में चली गई। उसने जब पिता के लिए रसोई करनी चाही, तो रसोई में कुछ न था। वह दुःखी-दुःखी पिछवाड़े में गई और पिछवाड़े के रास्ते बाहर चली गई।

वहाँ उसे पर्णक दिखाई दिया और उसने उसको पास बुलाया। उसको पास आने पर पर्णक ने कहा—"जब तुम्हारे पास बुढ़िया को भेजा, तो तुमने कहा कि सोचकर बताओगी! मेरे लिए एक-एक क्षण एक-एक युग की तरह बीत रहा है। जब से मैंने तुम्हें, तुम्हारे घर के सामने देखा है, न तब से कुछ खाया है, न मैं सोया ही हूँ। आखिर सपने में भी तुम ही दिखाई दे रही हो। क्यों, तुम मुझे यों सताती हो!"

कल्पट की पत्नी ने कहा—"मैं अब तुम्हें न सताऊँगी। तुम्हारे साथ चली आऊँगी। परन्तु पहिले मुझे सेर-भर माँस चाहिए। मेरे पिता मुझे देखने आये हैं, उनके लिए खाना बनाना है।"

"यहीं ठहरो, अभी माँस लाकर देता हूँ।" पर्णक ने माँस लाकर दे दिया। "अब देरी न करो, मेरे साथ चली आओ।" उसने कहा।

"नहीं, देरी न करूँगी।" वह अन्दर गई और पर्णक उसके लिए बाहर चहलकदमी करने लगा।

कल्पट की पत्नी ने माँस काटकर बर्तन में रखा। इतने में कल्पट घर वापिस आया। चौपाल में अपने ससुर को देखते ही उसके शरीर पर बिच्छू से दौड़ने लगे। उसने ससुर से साधारण कुशल प्रश्न किये।

फिर रसोई में आकर पत्नी से पूछा—"क्या बना रही हो?"

"मांस, पड़ोसियों ने दिया है।" पत्नी ने कहा।

"हम दोनों का ही गुज़ारा नहीं चल रहा है, अब तीसरे का कैसे गुज़ारा किया जाय!" कल्पट ने कहा।

"मैं नहीं जानती।" पत्नी ने कहा।

कल्पट उस धनी के घर गया, जहाँ वह काम किया करता था। यह कहकर कि उसके ससुर आये हुए थे, वह उससे थोड़ा मांस और दूध माँग लाया।

पिछवाड़े के दरवाज़े के पास बहुत देर तक चहलकदमी करता रहा, फिर वह ऊब गया। यह देखने के लिए कि कल्पट की पत्नी क्या कर रही थी, वह सामने के दरवाज़े के पास गया और अन्दर झाँक झाँक कर देखने लगा। चौपाल में कल्पट ससुर के पास बैठा था। उसे देखकर, उसने कहा—"आओ, अन्दर आओ।" वह किस काम पर आया था, यह न कल्पट जानता था, न उसका ससुर ही।

जब तीनों चौपाल में बैठे बातें कर रहे थे, तो कल्पट की पत्नी ने खाना

बनाकर, मांस को एक थाली में रखकर, कहा—"तीनों मूर्ख, अब इसे हज़म कीजिए।"

"कौन हैं तीन मूर्ख!" उसके पिता ने पूछा।

"पहिले तुम मूर्ख हो। तुमसे बड़ा मूर्ख मेरा पति है और उससे भी बड़ा मूर्ख यह पर्णक है, जो मुझे अपना बनाना चाहता है।" कल्पट की पत्नी ने कहा।

कल्पट का पिता, जो कुछ हुआ था, वह ताड़ गया। घर जाते ही उसने अपनी आधी गौवें, अपनी लड़की के घर भेज दीं। उसके बाद कल्पट और पत्नी, बिना गरीबी की बाधा के आराम से रहने लगे।

बेताल ने कहानी सुनाकर पूछा—"क्यों, कल्पट की पत्नी ने, अपने पिता, पति और प्रेमी को मूर्ख कहा था? यदि जान-बूझकर न बताया, तो सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने कहा—"जिसके पास छः हज़ार गौवें हों और यदि वह अपनी लड़की सौ गौवों के लिए ही दे दे, तो वह मूर्ख नहीं, तो क्या होगा? जो शादी करता है, वह अपनी सम्पत्ति बढ़ाकर पत्नी को खुश करना चाहता है, पर अपनी सम्पत्ति खोता नहीं। क्योंकि कल्पट ने ऐसा काम किया था, इसलिए कल्पट और भी बड़ा मूर्ख था। कल्पट जिसको सौ गौवें देकर खरीदकर लाया था, उसे सेर-भर मांस देकर खरीदनेवाला सबसे बड़ा मूर्ख था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा चढ़ बैठा।

[कल्पित]

चन्दामामा का मन्दहास

सदियों पहिले फारस में शारिमान नाम का बादशाह था। वह खुरासान में रहा करता था, उसकी होने को तो सौ स्त्रियाँ थीं, पर किसी से भी उसको एक बच्चा तक न था।

वह एक दिन अपनी चिन्ता को भूलने के लिए विद्वद्गोष्टि में मग्न था। एक द्वारपालक ने आकर बताया कि कोई व्यापारी बादशाह के दर्शन के लिए एक गुलाम लड़की के साथ प्रतीक्षा कर रहा था। बादशाह ने उसको अन्दर लाने की आज्ञा दी। व्यापारी गुलाम लड़की को दरबार में लाया। उसने जब उसके मुँह का परदा हटाया तो सब उसका सौन्दर्य देखकर दंग रह गये। उसके मुँह पर ऐसी आन-बान थी, जो प्रायः महारानियों के मुँह पर होती है।

बादशाह ने व्यापारी से पूछा—"इसकी कितनी कीमत है?"

"बादशाह, मैंने इसे एक और व्यापारी से दो हज़ार दीनारें देकर खरीदा है। फिर मैं तीन साल सफ़र करके इसको यहाँ लाया हूँ। इस तरह इस पर तीन हज़ार दीनारें और खर्च हुई हैं। परन्तु मैं इसे अब आपको उपहार देने के लिए लाया हूँ, न कि बेचने के लिए।" व्यापारी ने जवाब दिया।

यह सुन बादशाह सन्तुष्ट हुआ। व्यापारी को दुशाले आदि दिये। दस हज़ार दीनारें ईनाम में दीं। व्यापारी बादशाह की दरियादिली, बड़प्पन की प्रशंसा करता अपने रास्ते चला गया।

नवागन्तुक

उसके आराम के लिए कुछ समय देकर बादशाह उसकी जगह पर आया। बादशाह को आता देख वह लड़की उठी नहीं। उसने उसकी परवाह नहीं की। बादशाह ने चकित होकर सोचा—"जिस किसी ने इसको पाला पोसा है, वह निरा असभ्य होगा।" परन्तु उसका सौन्दर्य देखकर बादशाह ने उसके अविनय को माफ़ कर देने की सोची। वह उसके पास बैठ गया और उससे धीमे धीमे बातें करने लगा। परन्तु उसने कोई जवाब न दिया। शायद उसने बादशाह की बात सुनी भी न थी।

बादशाह ने अन्तःपुर की दासियों को गुलाम लड़की को सौंपते हुए कहा—"इनको अच्छी तरह नहलाओ। इनके शरीर पर ऐसे सुगन्धित द्रव्य लगाओ ताकि सफ़र की थकावट जाती रहे। समुद्र के किनारे के बंगले में इनके रहने का इन्तज़ाम करो।"

शारिमान जहाँ रहता था, वह "श्वेतपुर" समुद्र के किनारे था। इसलिए इस महल के पास के बंगले में गुलाम लड़की के रहने का इन्तज़ाम किया जा सका।

इस पर भी राजा ने गुस्सा नहीं किया। उसके सौन्दर्य ने उसको पूरी तरह अभिभूत कर लिया था। यह सोच कहीं यह गूँगी तो नहीं है, बादशाह ने दासियों से पूछा—"क्या किसी ने इनको बातें करते सुना है?"

"हम जब तक उनको नहलाती रहीं, या संवारती रहीं, कपड़े पहिनाती रहीं, तो इन्होंने न हाँ करते एक बात कही, न न करते ही। शायद वे हम पर नाराज़ हैं, नहीं तो वे शायद हमारी

भाषा समझती नहीं है।" दासियों ने बादशाह से कहा।

राजा का आश्चर्य और भी बढ़ा। उसे एक सन्देह हुआ। बादशाह ने यह सोच कि उसके न बात करने का अवश्य कोई बहुत बड़ा राज़ होगा, उसके मनोरंजन के लिए नाचने गानेवालियों को बुलवाया। नृत्य और गान देखकर सब तो बड़े खुश हुए पर वह चुपचाप बैठी रही। उसके मुँह पर मुस्कराहट तक न आयी।

सब तरह बादशाह निराश हो गया था, तो भी बादशाह ने उस गुलाम लड़की से शादी की ओर उसके लिए प्रेमवश राज्य कार्य सब छोड़ छाड़ दिया और उसी के मकान में सारा समय बिताने लगा। सिवाय इसके की उसने कभी मुख खोलकर बात न की थी, अन्यथा राजा की गृहस्थी उसके साथ हर तरह से आनन्ददायक थी।

कभी कभी बादशाह उससे कहा करता "तुम देख ही रहे हो मैं तुम्हें किस तरह प्रेम कर रहा हूँ। तुम्हारे लिए सब पत्नियाँ और राज्य को भी छोड़कर गुलाम की तरह तुम्हारे पास पड़ा हूँ। मेहरबानी करके तुम मुझ से बात क्यों नहीं करती! क्या मुझ से कोई गल्ती हुई है! क्या तुम्हें कुछ चाहिये! मुझ से कहो, चाहे कितनी भी कठिनाई हो, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगा। अगर तुम गूँगी हो, तो कम से कम ईशारा करो। मैं ईशारे पर ही तसली कर लूँगा।"

एक दिन बादशाह ने उससे कहा—"मेरी सौ स्त्रियाँ हैं। पर एक भी सन्तान नहीं है। मेरी उम्र हो रही है। यदि तुम्हारे कम से कम एक सन्तान हुई, तो मैं आराम से आँखें बन्द कर

लूँगा। कहीं इसके कोई लक्षण हों, तो बताओ।"

बादशाह की यह बात सुनकर लड़की उसकी आँखों में देखकर, मुस्करायी। बादशाह को, उसको मुस्कराता देख ऐसा लगा जैसे सारा महल यकायक चमचमा उठा हो। वह बड़ा खुश हुआ।

तब उसने मुख खोलकर कहा—"बादशाह अब आपकी इच्छा पूरी हो गई है।" मैं इस समय गर्भवती हूँ।

राजा के आनन्द की कोई सीमा न रही। उसने उत्साह में कहा—"अल्लाह कितना मेहरबान है। मेरी दोनों इच्छाओं को एक साथ तुमने पूरा कर दिया। एक मैं पिता होने जा रहा हूँ और दूसरा यह कि तुम बोली हो।"

वह उठा और गुलामों से यह कहकर कि तुरत वापिस आ जायेगा, सीधे दरबार में गया। सिंहासन पर बैठकर उसने मन्त्रियों को आज्ञा दी कि ऐलान कर दो कि मैं शीघ्र ही पिता होनेवाला हूँ। गरीबों, विधवाओं और और लोगों को लाख दीनारें बाँट दो। यह सब बादशाह के हुक्म के मुताबिक कर दिया गया।

बादशाह दरबार से अपनी प्रेयसी के पास आया,—"अब तो कम से कम बताओ कि तुम साल भर मेरे सामने और मेरे दास-दासियों के सामने क्यों चुप रही? और अब क्यों यकायक बोलने का निश्चय किया!"

"बादशाह! मैं कहीं से गुलाम बनाकर यहाँ लाई गई। मैं अपने देश से, माँ से, भाई से दूर हो गई। गुलाम की हालत में ही यहाँ आयी। मेरा दिल शोक के कारण तड़प रहा था उस स्थिति में मैं किसी के साथ किस तरह बात करती!"

"मैं तुम्हारे कष्ट समझ सकती हूँ। पर यह कहना गलत है कि तुम यहाँ गुलाम बना दी गई हो। मैंने तुमको बेगम बनाया। मैं ही तुम्हारा गुलाम बन गया, यदि तुम इसलिए दुखी हो कि अपने लोगों से दूर हो तो मुझे जरा संकेत कर देते, मैं उनको झट बुलवा देता।"

इस बात का उसने यों जवाब दिया।

"मेरा नाम गुलनार है। मेरा जन्म स्थल समुद्र है। मेरा पिता एक समुद्र राजा था। उनके मर जाने के बाद, न मालूम क्यों मुझे एक बार अपनी माँ और भाई पर

गुस्सा आया। यह सोच कि मैं अब समुद्र में रहूँगी ही नहीं, जमीन पर रहूँगी और जो कोई पहिले पहल मिलेगा, उससे शादी कर लूँगी एक दिन रात को, जब मेरी माँ और भाई सलिहा सो रहे थे, मैं घर से निकली और एक द्वीप में आयी। भरी चान्दनी में, निर्मल नक्षत्रोंवाले, चमचमाते आकाश के नीचे मैं सो गई। क्यों कि ठण्डी ठण्डी बयार चल रही थी, इसलिए मैं जल्दी ही सो गई। मैं जब सो रही थी, तो किसी ने आकर मुझे पकड़ लिया। मैं उससे झगड़ी तो, पर मैं उसकी पकड़ ढ़ीली न कर पायी। वह मुझे अपनी झोंपड़ी में ले गया। वहाँ मैंने उसे खूब हाथ पैर से मारा पीटा। जब वह जान गया कि मैं उसके बस में नहीं आने वाली थी, तो उसने मुझे अगले दिन एक व्यापारी को गुलाम के तौर पर बेच दिया। उस व्यापारी ने लाकर मुझे आपको सौंपा। वह व्यापारी बड़ा भला था। मेरी उम्र देखकर, उसने मुझे अपने लिए नहीं रखा। बल्कि आपको सौंपने इतनी दूर मुझे लाया। जब मैं पहिले पहल आयी, तो मैंने सोचा यदि मुझे कोई छुएगा, तो मैं समुद्र में कूदूँगी और अपने भाई और माता से मिल जाऊँगी। जब आपने मुझसे विवाह किया, तभी मुझे यह काम कर देना चाहिये था। पर तब अभिमान ने मुझे रोका। उस अभिमान के कारण ही मैंने किसी से बात न की। पर जब मुझे मालूम हुआ कि आप मुझ से सचमुच प्रेम कर रहे थे, तो मेरा मन बदलने लगा। गर्भिणी होने के बाद आप पर मेरा प्रेम और भी बढ़ता गया। बचकर भाग निकलने की बात बिल्कुल ही जाती रही। एक और भी कारण था। यदि मेरी माँ

और भाई को मालूम हो गया, कि मैं एक भूमिवासी की पत्नी हो गई हूँ, तो वे अपमान से झुलस उठेंगे। जब मैं कहूँगी कि मेरा पति फारस साम्राज्य का सम्राट है, जो संसार में सब से बड़ा है, वे विश्वास नहीं करेंगे। यह मेरी कथा है।"

बादशाह ने गुल्नार की कहानी सुनकर कहा—"गुल्नार, तुम्हारी कहानी अजीब है, तुम भी अजीब हो। पर एक बात तो बताओ, तुम कह रही हो, कि तुम समुद्र वासी हो, और मैं विश्वास करता हूँ। क्या तुम इसके बारे में कुछ और विवरण दोगी! पानी की तह में लोग कैसे जीवित रहते हैं, वे क्या दम घुटकर मर नहीं जाते! यह आश्चर्यजनक बात है।"

तब गुल्नार ने यों कहा।

"आप जैसे भूमि पर जीते हैं, वैसे ही हम पानी में जी सकती हैं। जैसे आप हवा पीते हैं, उसी तरह हम पानी पीकर, प्राण पोषण करते हैं। उससे भी एक और मुख्य विषय पर बात करनी है। आपके प्रसवों में और हमारे प्रसवों में बहुत फर्क है। इसलिए आपकी दाइयाँ, हो सकता है, ठीक तरह प्रसव न करा सकें। मुझे माँ भाई आदियों को बुलाने की अनुमति दीजिए। मैं उनसे सन्धि करके, उनकी सहायता से अपना प्रसव कर सकूँगी।"

राजा ने कहा—"मैं भला क्यों इस बात पर एतराज करूँगा। क्या ठीक समय तुम्हारे लोगों को खबर पहुँच सकेगी! क्या वे तुम्हारे प्रसव के समय आ सकेंगे! यदि यह बात पहिले बताती, तो मैं उनके स्वागत के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियाँ करवाता।"

"हमारे लोगों को कोई स्वागत वागत नहीं चाहिए और उनको बुलाने लाने

के लिए रोज, सप्ताह की जरूरत नहीं है। क्षण में बुलाया जा सकता है। आप दूसरे कमरे में जाकर मुझे और समुद्र को गौर से देखिये। उनको चुटकी भर में यहाँ बुलाती हूँ।" गुल्नार ने कहा।

बादशाह दूसरे कमरे के एक खिड़की में से अपनी पत्नी को और एक और खिड़की से समुद्र को देखने लगा। गुल्नार ने दो बत्तियाँ निकालीं। उनको सोने के धूप पात्र में रखा। फिर उनको जलाया। धुँआ निकलते ही उसने सीटी बजाते कुछ मन्त्र पढ़े।

तुरत समुद्र में उफान-सा आने लगा। उसमें से एक युवक ऊपर आया। वह सुन्दर तो था ही। वह गुल्नार से मिलता भी था। वह ही गुल्नार का भाई राजकुमार सालिहा था। उसके पीछे सफेद बालोंवाली एक बुढ़िया आयी। वह ही समुद्र राजा की पत्नी गुल्नार की माँ थी। उसके बाद पाँच लड़कियाँ आयीं। ये बहुत सुन्दर थीं।

वह युवक और छहों स्त्रियाँ पानी के ऊपर चलती महल तक आयीं। एक के पीछे एक गवाक्ष में से अन्दर कूदीं।

उनको अन्दर आने देने के लिए स्वयं गवाक्ष से उतर पड़ी थी।

सबने गुल्नार का आलिंगन किया। आनन्दाश्रु बहाते हुए उन्होंने कहा—"गुल्नार चार साल हमें छोड़कर तुम कैसे रह सकी! कोई खबर भी न भेजी। हम कितने दुखी रहे।"

"तुमसे कहे बगैर आकर मैने बड़ी गल्ती की है। पर विधि को कौन टाल सकता है! कुछ भी हो फिर सब मिल गये यही काफी है।" यह कहकर गुल्नार ने अपने लोगों को अपने पास बिठाया। फिर उसने अपनी कहानी सुनायी। आखिर उसने कहा—"मैं अब इस बादशाह की पत्नी हूँ। और गर्भवती हूँ। इसलिए ही अपने प्रसव के लिए आप सब लोगों को बुलाया है। मुझे यहाँ की दाइयों पर विश्वास नहीं है। वे हमारी बातें बिल्कुल नहीं जानती हैं।

गुल्नार की माँने अपनी लड़की से कहा—"यह देख कि तुम भूमि पर रह रही हो, इसलिए कष्ट में हो, मैने सोचा। क्यों कि आराम से हो इसलिए हमें कोई चिन्ता नहीं है। परन्तु मनही

मन सोचती हूँ कि यदि तुमने किसी समुद्र के राजकुमार से विवाह किया होता, तो अच्छा होता। मैं सच कहती हूँ कि मैं बहुत खुश हूँ। मेरी सब इच्छायें पूरी हो गई हैं। अब मेरे चाहने के लिए कुछ बाकी नहीं रह गया है।" गुल्नार ने अपनी माँ को बताया।

बगल के कमरे में राजा जो गुल्नार की बातें सुन रहा था, खुशी से फूला न समाया।

गुल्नार ने अपनी दासियों को बुलवाकर भोजन परोसने के लिए कहा। वह स्वयं पाकशाला में गई। तरह तरह के पकवान

बनवाकर फल आदि मंगवाकर मेज़ पर रखवाये। अपने लोगों को उसने अपने साथ भोजन करने के लिए कहा।

इस बात पर वे न मानें, उन्होंने कहा—"तुम बादशाह को खबर भेजो कि हम यहाँ आये हैं। बिना उनकी अनुमति के तो हम आये ही, अब उनकी अनुमति के बिना हम खा भी रहे हैं, उन्हीं के यहाँ, उन्हीं का खाना, वे यह जानते तक नहीं हैं कि हम कौन हैं।"

गुल्नार बगल के कमरे में जाकर अपने पति को बुला लायी। राजा ने उनसे अच्छी तरह बातचीत की, उनका खूब सत्कार सम्मान किया। उन्होंने उसका अभिनन्दन किया। इसके बाद, स्वयं राजा ने वहाँ खड़े होकर, उनको भोजन परोसवाया।

गुल्नार के प्रसव तक, उसके सम्बन्धियों ने वहीं रहकर, दावत और मनोरंजन में समय व्यतीत किया। अपनी माँ आदि की सहायता से गुल्नार ने एक लड़के को जन्म दिया। लड़के के पैदा होते ही उन्होंने उसे बादशाह को दिखाया। उसको देखकर बादशाह को जो खुशी हुई उसका वर्णन करना असम्भव है। अल्लाह के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए उसने गरीबों, विधवाओं और अनाथों में, तरह तरह के उपहार बँटवाये। कैदियों को छुड़वाया।

एक सप्ताह तक लगातार उत्सव मनाये जाते रहे। गुल्नार ने अपने पति की अनुमति पर अपने लड़के का नाम बद्रबसीम रखा। बद्रबसीम का अर्थ "चन्दामामा का मन्दहास" है। (अभी है)

सम्पाति ने भाई की मृत्यु की दुर्वार्ता सुनकर, आँसू बहाते हुए कहा—
"जटायू को मारनेवाले उस दुष्ट रावण से बदला भी लेना चाहूँ तो मैं बूढ़ा हूँ। मेरे पंख भी नहीं हैं। क्या कर सकता हूँ! पहिले वृत्रासुर की हत्या के दिनों में हम दोनों, एक दूसरे का होड़ करते हुए आकाश में गये। दुपहर की गरमी जटायु सह न सका और वह बेहोश-सा हो गया। तब मैंने उसको अपने पंखों की साया दी थी। इस कारण ही मेरे पंख जल गये और मैं इस विंध्या पर्वत पर गिर गया। इतने दिन यहीं रहा और मुझे मेरे भाई का समाचार ही न मिला।"

यह सुन अंगद ने कहा—"यदि तुम जटायु के ही भाई हो, तो बताओ वह रावण कहाँ है! यहाँ से वह कितनी दूर है।"

"बेटा, सचमुच मुझे राम का ही काम करना चाहिए था। पर बूढ़ा हूँ, कमज़ोर हूँ। इसलिए कम से कम मुख से ही सहायता करूँगा। यह सच है कि रावण सीता को ले गया है। वह लंका में रहता है। वह यहाँ से दो सौ योजन दूरी पर समुद्र में है। लंका द्वीप में लंका नगरी

भी है। उसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया है। वहाँ उसने सोने के दरवाजे, सोने के प्राँगण और प्राकार बनाये। उस लंका में ही रावण के अन्तःपुर में, सीता राक्षस स्त्रियों के बीच में दुखी बैठी है। क्योंकि गृद्ध जाति का हूँ, इसलिए यहाँ से ही रावण और सीता को देख सकता हूँ। यदि तुम तुरत वहाँ गये, तो तुमको सीता अवश्य दिखाई देगी।" सम्पाति ने आश्वासन देते हुए कहा।

तब जाम्बवन्त ने सम्पाति से पूछा, किसने रावण को, सीता को उठाकर ले जाते देखा था! बाकी वानर, सम्पाति की बातों को सुनने की प्रतीक्षा करने लगे।

"वह भी सुनाता हूँ। सुनो। क्योंकि मैं हिल डुल नहीं पाता हूँ इसलिए रोज मेरा लड़का नियमित रूप से मेरे लिए कुछ खाने को लाता रहता है। परन्तु वह एक दिन सूर्यास्त के बाद देरी से ही नहीं आया बल्कि, खाली हाथ भी आया। क्योंकि मैं बहुत भूखा था, इसलिए मैंने उसे खूब डाँटा फटकारा। उसने तब मेरा क्रोध शान्त करने के लिए जो कुछ हुआ था, बताया। वह मेरे भोजन के लिए

महेन्द्र पर्वत में बड़े बड़े जन्तुओं के रास्ते में खड़ा था। उस समय एक काले शरीरवाला सूर्योदय की तरह चमकनेवाली स्त्री को लेकर वहाँ आया। उस पुरुष और स्त्री को मेरा लड़का मेरे भोजन के लिए लाना ही चाहता था, कि उस काले पुरुष ने बड़ी नम्रता से रास्ता देने के लिए कहा। यह देख कि उसने विनयपूर्वक माँगा था, मेरे लड़के ने रास्ता दे दिया। यह देख वहाँ के मुनियों ने सुपार्श्व से कहा—"आज तुम भाग्य से जीवित निकल गये हो। तुम से रास्ता माँगनेवाला और कोई नहीं रावण था और वह राम की पत्नी सीता को उड़ा ले जा रहा था।" यह सब हो गया था, इसलिए ही वह मेरे लिए भोजन नहीं ला पाया था। उसने बताया....।"

फिर सम्पाति अपने भाई का तर्पण करके स्नान करके एक जगह बैठ गया। वानर उसके चारों ओर बैठ गये। सम्पाति ने फिर उनसे कहा—"मैंने बताया था कि सूर्य की गरमी से मेरे पंख जल गये थे और मैं यहाँ गिर गया था। ६ दिन मैं बेहोश रहा। फिर बाद में मालूम हुआ कि मैं विंध्या पर्वत में गिरा था। तब

यहाँ, निषाकर महर्षि का आश्रम था। वे बड़े तपस्वी थे। पहिले ही मैं और जटायु उस महर्षि को जानते थे। मैं धीमे धीमे घसिटता घसिटता उनके आश्रम के पास गया और उनके दर्शन के लिए एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद, महर्षि स्नान करके उस तरफ़ आये। वे सीधे आश्रम गये, फिर वापिस आकर उन्होंने पूछा कि मैं किस काम पर आया था। उन्होंने मेरी दुस्थिति का कारण पूछा। उन्होंने मुझे पहिचाना भी। मैंने उनसे जो कुछ गुजरा था, वह बताया। मैंने उनसे यह भी कहा कि मैं आत्महत्या करना चाहता हूँ। मैं अपना दुख रोक न सका। फिर उन्होंने आँखें मूँदकर, ध्यानस्थ होकर कहा—"फिर तुम्हारे पंख आ जायेंगे। भविष्य में दशरथ नाम का राजा होनेवाला है। उसका लड़का पत्नी के साथ बनवास के लिए आयेगा। जब वे जनस्थान पर होंगे, तो रावण नामक राक्षस राजा उनकी पत्नी को उठा ले जायेगा। राम के वानरों को उनको खोजने के लिए भेजने पर वे तुम्हारे पास आयेंगे। तुम उनको सीता के बारे में बताओ। क्योंकि तुम कहीं जा नहीं सकते हो, इसलिए तुम यहीं रहो।" यह सब आठ हजार साल पहिले की बात है। मुझे यह बतानेवाले महर्षि सौ साल बाद इस शरीर को छोड़ गये। मैं दुविधा में पड़ गया। रावण बलशाली हो, तो हो, परन्तु जब मेरे लड़के ने बताया कि वह सीता को उठाकर ले जा रहा था, तो मैंने उसे डाँटा कि क्यों नहीं वह सीता को छुड़ाने के लिए लड़ा था! मेरे भाई ने इस काम में प्राण छोड़ दिये, पर मेरे लड़के ने कुछ भी नहीं किया। इसमें सन्देह नहीं

कि रावण बड़ा पराक्रमशाली है। पर तुम भी कम नहीं हो। सुग्रीव ने अच्छे ही लोगों को चुनकर भेजा है। अगर तुम गये, तो सीता अवश्य दिखाई देगी। फिर राम और लक्ष्मण के बाणों से रावण अवश्य मारा जायेगा। मेरे भाई को मारने का बदला भी इस तरह निकल जायेगा।"

जब सम्पाति, यह वानरों से कह रहा था, तो उसके नये पंख आने लगे। सम्पाति ने खुश होकर कहा—"देखा, निशाकर महर्षि ने जो कहा था, वह बिल्कुल ठीक निकला है। उन्होंने यह भी बताया था कि जिस काम पर तुम जा रहे हो, वह भी अवश्य होगा। इसलिए तुम अपने कार्य में जरूर सफल होगे।" कहता, वह आकाश में उड़ गया।

वानर भी सोत्साह दक्षिण की ओर निकल पड़े। सीता का पता मालूम हो गया था, इसलिए वे खुशी में चिल्लाये, उछले कूदे। वे चलते-चलते दक्षिण समुद्र के किनारे गये।

जब समुद्र को देखकर, वानरों को भय हुआ। उस समुद्र में सौ योजन दूर लँका थी। उसको कैसे पार किया जाय!
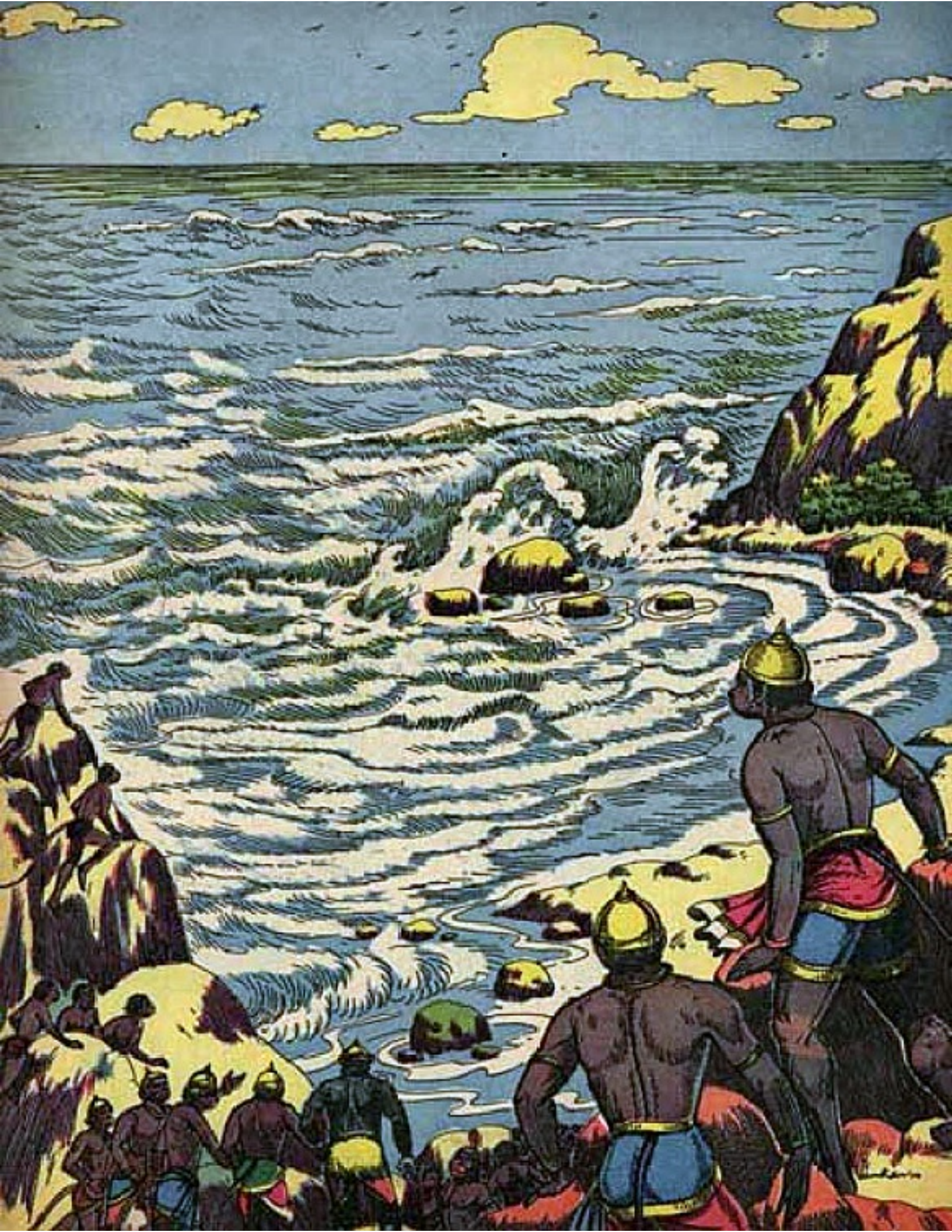
अंगद ने बड़े-बड़े वानरों की सभा बुलाकर कहा—"हम इस समुद्र को बिना पार किये, सीता को नहीं देख सकते। उनको देखे बगैर वापिस जाने से तो अच्छा यही है कि हम यहाँ उपवास करें। समुद्र को देखकर डरने से कोई फायदा नहीं है। यह बताओ तुम में से कौन-कौन कितनी कितनी दूर उछल सकता है।" समुद्र को पार कर लंका पहुँचनेवाले पर हम सब का क्षेम निर्भर है।

गज ने कहा कि वह दस योजन कूद सकता था। गवाक्ष ने कहा कि बीस योजन। गवय ने कहा कि तीस योजन, शरभ ने कहा कि चालीस योजन। गन्धमादन, मैन्द, द्विविद ने क्रमशः कहा पचास, साठ और सत्तर। सुषेण ने कहा कि वह अस्सी योजन कूद सकता था।

जाम्बवन्त ने कहा—"एक समय था कि जब मैं कितनी भी दूर कूद सकता था। त्रिविक्रम ने जब वामन का अवतार लेकर, तीनों लोकों को तय कर लिया था, तब मैंने उनकी प्रदक्षिणा की थी। अब बूढ़ा हूँ। नब्बे योजन से अधिक नहीं कूद सकता।"

तब अंगद ने कहा—"मैं आसानी से सौ योजन दूर कूद सकता हूँ। पर वापिस

आ सकूँगा कि नहीं यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता।"

यह सुनकर जाम्बवन्त ने कहा—"तुम हम में से एक को लंका भेज सकते हो। पर हम तुम्हें कैसे भेज सकते हैं! यह नहीं हो सकता।"

"जब मैं नहीं भेजा जाऊँगा और आप में से कोई जा नहीं सकता, उस हालत में हमें यहीं उपवास करना पड़ेगा।" अंगद ने कहा।

"इस बात पर तुम कुछ न सोचो। हम में से सफलतापूर्वक काम करनेवाला, देखो, वह

दूर चुपचाप अकेला बैठा है।" कहते हुए जाम्बवन्त ने हनुमान की ओर ईशारा किया।

उसने हनुमान के पास आकर कहा—"हम सब यहाँ माथापची कर रहे हैं और तुम इस तरह यहाँ बैठे हो, जैसे कुछ हो रहा हो। तुम तो पैदा होते ही सूर्य को फल समझकर, उसको निगलने के लिए आकाश में उड़े थे न! यदि तुम इस महासमुद्र को नहीं पार कर सकोगे, तो और कौन कर सकेगा! गति में वायु के समान हो। गरुत्मन्त से कम नहीं हो। कूदने उड़ने में, तुम्हारी बराबरी का हम में कौन है? तुम्हारा चातुर्य देखने के लिए ये सब वानर प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो उठो, अपनी शक्ति दिखाओ।"

ये बातें सुनकर, हनुमान का शरीर फूलता गया। हनुमान के शरीर को फूलता देख वानर जयजयकार करने लगे। उनकी प्रशंसा को सुनते-सुनते हनुमान की शक्ति भी बढ़ती गई। उसने जोश में कहा—"हाँ, मैं इस समुद्र को यूँ पारकर जाऊँगा। चाहो, तो मैं सूर्य के साथ पूर्व से निकल कर पश्चिम तक पहुँचकर, दुपहर को फिर सूर्य का सामना कर सकता हूँ। शुभ शकुन दिखाई दे रहे हैं। मैं अवश्य सीता देवी को देखकर आऊँगा। तुम दुखी न हो।"

वह सोच कि जब वह भूमि से उड़ेगा, तो भूमि काँप उठेगी—वह महेन्द्र पर्वत के शिखर पर जा चढ़ा। जब वह वहाँ चल रहा था, तो उसके पैर पड़ते ही बड़े-बड़े चट्टान चूरे-चूरे हो गये और महेन्द्रगिरि के जन्तु डरकर चारों ओर भागने लगे।

[किष्किन्धाकाण्ड समाप्त]

२३. "इन्द्रधनुष" जलप्रपात

अफ्रीका के विक्टोरिया के चारों जलप्रपातों में "इन्द्रधनुष" जलप्रपात अधिक ऊँचा है। यह प्रपात जाम्बेसी नदी से सम्बन्धित है। "इन्द्रधनुष" प्रपात की ऊँचाई नियागरा से दुगनी है। करीब ३५० फीट। यह सौ फीट चौड़ी घाटी में गिरती है।

१. दिनेशकुमार, धनबाद

क्या आप जो बेताल की कहानियाँ छाप रहे हैं, वे सही हैं ?

कहानियाँ हैं। सही और गलत का सवाल नहीं उठता। जो काल्पनिक हैं, हम उनके नीचे काल्पनिक लिख देते हैं और जो पारम्परिक हैं, वे हम दे ही चुके हैं।

२. कामकुमार प्रसाद, गया

क्या फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता प्रत्येक चन्दामामा (हर भाषा) में होती है। अगर हाँ तो क्या हिन्दीवाले फोटो ही हर भाषा के "चन्दामामा" में छपते हैं ?

हाँ, हर भाषा में होती है। हर भाषा की परिचयोक्तियाँ अलग अलग होती हैं।

३. बलराम चहले, रायपुर

"चन्दामामा" में आप कहानी में लेखकों के नाम क्यों नहीं देते ?

कहानी के नीचे नाम देते हैं।

४. कृष्णप्रकाश बैसल, मथुरा

क्या "भयंकर घाटी" का पूरा सेट यानि पिछली २५ "चन्दामामा" मिल सकती है ?

जी नहीं, हमारे पास से तो नहीं।

५. भगवानदास गेड़ानी, बुरहानपुर

आप "पत्रमित्र" स्तम्भ कब से शुरू कर रहे हैं ?

अभी तो कोई ख्याल नहीं है।

६. राम अवतार, कलकत्ता

"चन्दामामा" में अकबर बीरबल, बाल विनोद दुबारा भी छापेंगे ?

जी नहीं।

७. एस. नागराज, वाराणसी

आप अच्छे प्रश्न को पुरस्कार क्यों नहीं देते ?

चूंकि प्रश्नों का क्षेत्र सीमित है। आप हमारे संकेत का अनुमान कर सकते हैं।

८. शिवकुमार कजरिवाले, झरिया

क्या आप "बौद्धधर्म" पर आधारित कहानियां छाप सकते हैं ?

कितनी ही बालक कहानियाँ छाप चुके हैं और भी छापेंगे।

९. उमेशचन्द्र आहुजा, लखनऊ

क्या आपने "महाभारत" की सम्पूर्ण कथा किसी एक पुस्तक में प्रकाशित की है ?

जी नहीं।

१०. अशोककुमार, बरेली

किसी पाठक के प्रश्न का, आप जो उत्तर देते हैं उस पर यदि कोई तर्क करना चाहे तो क्या करें ?

यह प्रश्नोत्तर स्तम्भ है। वाद विवाद का मंच नहीं।

११. लक्ष्मणदास आहुजा, तुमसर

"चन्दामामा" में प्रकाशित कहानियाँ क्या काल्पनिक होती हैं ?

जी हाँ, क्या वे वास्तविक मालूम होती हैं ?

१२. अवतारचन्द, चन्दीगढ़

जो आपका "चन्दामामा" है, क्या आप उसे साप्ताहिक बना सकते हैं ?

अभी तो नहीं।